नीपको
NEEPCO

नीपको

रतनदीप

राजभाषा हिंदी पत्रिका

अंक : 4

वर्ष 2017

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(मिनी रत्न, भारत सरकार का उद्यम)
समन्वयन कार्यालय नीपको, नई दिल्ली

उत्तर क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

माननीय गृह राज्य मंत्री जी से राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए श्री राजीव रंजन, प्रबंधक (आई. टी.)।

माननीय गृह राज्य मंत्री जी से प्रशस्ति पत्र प्राप्त करती हुई सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी।

वर्ष 2015-16 के दौरान, उत्तर क्षेत्र-1 के अंतर्गत "क" क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा समन्वयन कार्यालय, दिल्ली को द्वितीय पुरस्कार के लिए चुना गया। आगरा में दिनांक 06 अक्टूबर, 2016 को आयोजित उत्तर क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन व पुरस्कार वितरण समारोह में द्वितीय पुरस्कार के लिए माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री किरेन रीजीजू जी के कर कमलों से पुरस्कार स्वरूप कार्यालय को राजभाषा शील्ड तथा कार्यालय में संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए द्वितीय स्थान प्राप्त करने में सराहनीय योगदान के लिए सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

रतनदीप - अंक 4

संरक्षक
श्री एच.भराली, समन्वयक

सलाहकार मंडल
श्री शांतनु बेजबरूवा, वरि. प्रबंधक (मा.सं.)
श्रीमती एलिजाबेथ पिरबट, प्रबंधक (ई)
श्री विकाश मनी भारद्वाज, प्रबंधक (वित्त)
श्रीमती वांगमु रीजीजू, कनि. अभियंता (ई)

संपादक
सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी

"रतनदीप" पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। अत: पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए कार्यालय किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है।
पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

पता :
नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लि.
(मिनी रत्न, भारत सरकार का उद्यम)
समन्वयन कार्यलय :
यू0जी0 फ्लोर, 15 एनबीसीसी टावर, भीकाजी कामा प्लेस,
नई दिल्ली - 110066
दूरभाष : ईपीबीएक्स - (011) 26164329
फैक्स : (011) 26107555
ई-मेल : neepconewdelhi@gmail.com

इस अंक e

संदेश	2
टिप्पणी लेखन	3-5
हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2017-18 का वार्षिक कार्यक्रम	6
वर्ष 2016-17 के दौरान कार्यालय में राजभाषा हिंदी में किए गए कार्यों एवं उपलब्धियों का विवरण	7
वर्ष के दौरान हिंदी में कार्य करने के लिए लागू नकद पुरस्कार प्रोत्साहन योजना	8
सबसे बड़ा धन स्वस्थ तन-मन	8
स्वच्छ भारत अभियान	9
गूगल वॉइस टाइपिंग	10-11
पंडित दीनदयाल उपाध्याय कृत चन्द्रगुप्त नाटक: बाल स्वयंसेवकों के लिए एक भेंट	12-13
हिंदी कार्यशाला	14-15
यूपीआई	16-17
कंजूस	18
वक्त (कविता)	18
भारतीय लोक कला : वरली	19
कार्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़ा / हिंदी दिवस, 2016	20-21
ऑफिस कर्मचारियों के लिए कुछ सूक्ष्म एक्सरसाइज	22-23
हिंदी प्रतियोगिता	24-25
ज्वालादेवी	26-27
असम का काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान	28-29
मियां शेख चिल्ली का किस्सा	30
शब्दों के फुल फॉर्म	31
डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस	32-33
बधाई	33
अंतरात्मा	34
राष्ट्रीय गान और राष्ट्रीय गीत	35
आह वेदना, मिली विदाई (कविता)	36
मेरी बिटिया (कविता)	36
सत्संग के प्रभाव से पाँच प्रेतों के उद्धार की कथा	37
दिल्ली के कुछ धार्मिक स्थल जहां आप जरूर जाना चाहेंगे।	38-39
टिप्पणी के संदर्भ में प्रयोग होने वाले वाक्य	40

संदेश

प्रिय साथियों,

हिंदी की वार्षिक गृहपत्रिका 'रतनदीप' के चौथे अंक के प्रकाशन के अवसर पर मुझे आप सभी को संबोधित करते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है। पूरे देश में हिंदी के प्रति एक सकारात्मक माहौल बनता दिखाई दे रहा है। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिंदी में दिए गए संबोधन अपने आप में विलक्षण हैं तथा राजभाषा हिंदी को गति देने में उनकी सार्थक और अहम भूमिका है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हम भी अपने कार्यालयी कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग कर रहे हैं। लक्ष्य और सफलता हमेशा टीम वर्क तथा कड़ी मेहनत से ही प्राप्त की जा सकती है। आप सभी को यह जानकर हर्ष होगा कि वर्ष 2015-16 के दौरान उत्तर क्षेत्र-1 के "क" क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा अपने कार्यालय को द्वितीय पुरस्कार के लिए चुना गया। आगरा में दिनांक 06 अक्टूबर 2016 को आयोजित उत्तर क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन व पुरस्कार वितरण समारोह में द्वितीय पुरस्कार के लिए माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री किरेन रीजीजू जी के कर कमलों से पुरस्कार स्वरूप राजभाषा शील्ड तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। यह आप सभी के राजभाषा के प्रति समर्पण तथा प्रयोग की गई कार्यशैली का ही प्रतिफल है। आपके प्रयास से हम भविष्य में भी राजभाषा हिंदी को उच्च शिखर तक लेकर जाने हेतु प्रतिबद्ध हैं।

'रतनदीप' पत्रिका का यह चौथा अंक है और अब तक हिंदी दिवस के अवसर पर इसका नियमित प्रकाशन हो रहा है। पत्रिका को प्रकाशित करने का हमारा मुख्य उद्देश्य कार्मिकों और उनके परिवार के सदस्यों की हिंदी में लेखन की प्रतिभा को प्रोत्साहित करना और उन्हें एक मंच प्रदान करना था और संभवतः हम इसमें सफल भी हुए हैं। आप सभी इसी तरह लेख, कविता, विभिन्न ज्ञानोपयोगी रचनाओं आदि को निरंतर प्रकाशन हेतु भेजते रहें।

इन्हीं आकांक्षाओं सहित आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

एच भराली

(एच.भराली)
समन्वयक

टिप्पणी लेखन

टिप्पणी लेखन के बारे में जानने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि टिप्पणी लेखन का कार्यालयीन पद्धति में क्या स्थान है ? कार्यालय में जो पत्र आदि प्राप्त होते हैं, उन्हें आवती लिपिक छाँटकर विभिन्न अनुभागों में भेज देता है। अनुभाग अधिकारी महत्वपूर्ण आवतियों को उच्च अधिकारियों के पास डाक स्तर पर भेज देता है ताकि उनसे कार्य करने की दिशा के बारे में आवश्यक आदेश, अनुदेश आदि प्राप्त किए जा सकें। नेमी आवतियों पर अनुभाग के संबंधित सहायक कर्मचारी प्राथमिकता के अनुसार कार्रवाई करते हैं।

फाइल के दो भाग होते हैं-एक टिप्पणी भाग और दूसरा पत्राचार भाग। टिप्पणी भाग में किसी मामले या विचाराधीन कागज पत्रों के बारे में टिप्पणियां होती हैं। पत्राचार भाग में आवतियों तथा उनसे संबंधित पत्र-व्यवहार की कार्यालय प्रतियाँ रखी जाती हैं। पत्राचार भाग में रखे कागज-पत्रों पर लाल स्याही से क्रम संख्या लिखी जाती है। आवतियों पर क्र0सं0 (आवती) तथा कार्यालय से भेजे जाने वाले पत्रों की प्रतियों पर क्र0सं0 (निर्गम) लिखा जाता है। सहायक फाइल के टिप्पणी भाग में प्राप्त पत्र आदि की क्रम संख्या तथा पृष्ठ संख्या (आवती/निर्गम) लाल स्याही से लिखता है। इसे डाकैट करना कहते हैं। इससे टिप्पणी-लेखन में सुविधा रहती है। टिप्पणी का आशय टिप्पणी-भाग में संबंधित सहायक या अधिकारी द्वारा मामले के निपटान के लिए उस पर प्रकट किए विचारों और सुझावों से है।

आवतियों और अन्य मामलों के निपटान के लिए सहायक/लिपिक द्वारा फाइल पर टिप्पणी प्रस्तुत की जाती है। इस में पिछले कागज-पत्रों का सार, विचाराधीन मामलों का विवरण या विश्लेषण, कार्रवाई के बारे में सुझाव और उसमें दिए गए अंतिम आदेश शामिल होते हैं। इसके बाद सहायक टिप्पणी के नीचे बाईं ओर आद्यक्षर करके व तारीख लिखकर फाइल को अनुभाग अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत करता है। उस टिप्पणी से पूर्णत: सहमत होने पर संबंधित अधिकारी टिप्पणी के नीचे दाहिनी तरफ अपने हस्ताक्षर करता है। नेमी मामलों का निपटान वह अपने स्तर पर करता है। शेष मामलों को वह उच्च अधिकारियों के पास परामर्श के लिए भेज देता है।

टिप्पणी लेखन का प्रयोजन

जब किसी आवती के बारे में कार्रवाई की दिशा स्पष्ट हो, कार्रवाई के लिए पूर्व में लिए गए निर्णय विद्‌यमान हों और अधिकारी ने आवती पर कार्रवाई के लिए दिशा निर्देश दे दिया हो तो ऐसे मामलों में संक्षिप्त टिप्पणी के साथ उत्तर का मसौदा अनुमोदनार्थ प्रस्तुत किया जाता है। अन्य मामलों में जहाँ स्थिति अस्पष्ट हो और अधिकारी का मार्गदर्शन आवश्यक हो तो सहायक द्वारा टिप्पणी प्रस्तुत की जाती है। अधिकारी सहायक द्वारा टिप्पणी में आवश्यकतानुसार सुझाव जोड़कर उसे उच्चतर अधिकारी के पास भेज देता है। इस प्रकार अनुभाग अधिकारी अवर सचिव या उच्च अधिकारी को ऐसे मामले भेजता है जिन्हें वह अपने स्तर पर नहीं निपटा सकता। ये मामले उस पदाधिकारी के पास भेजे जाते हैं जो उन पर निर्णय लेने में सक्षम हो। इस प्रकार जो मामले उपसचिव, संयुक्त सचिव के अधिकारों की सीमा से बाहर हों, उन्हे मंत्री महोदय के आदेश के लिए भेजा जाता है।

टिप्पणी लेखन के संबंध में सामान्य हिदायतें

1) टिप्पणी में सभी तथ्य सही हों।

2) यदि तथ्यों मे कोई गलत बयानी हो या आंकड़े अथवा सूचना गलत हो तो उसकी ओर संयत भाषा में ध्यान दिलाया जाए।

3) कानूनी और प्रचलित कार्यविधि की और ध्यान दिलाते हुए विषय से संबंधित कानूनों और नियमों की ओर निदेश किया जाए।

कुछ न करने की कीमत कुछ गलत करने की कीमत से कहीं अधिक है।

4) पूर्व निर्णयों के दृष्टांत प्रस्तुत किए जाएँ।

5) जिन मामलों पर निर्णय लिया जाना हो उनका स्पष्ट उल्लेख किया जाए।

6) यदि संभव हो तो यह सुझाव दे दिया जाए कि संबंधित मामले में क्या कार्रवाई अपेक्षित है।

टिप्पणी लेखन के मार्गदर्शक सिद्धांत

1) टिप्पणियाँ संक्षिप्त और विषय संगत होनी चाहिए। लंबी टिप्पणियों के अंत में एक पैरा होना चाहिए जिसमें संक्षेप में लेकिन स्पष्ट रूप में विचाराधीन मामले का सार दिया हो। टिप्पणियों के पैराग्राफों पर क्रम सं. डाली जानी चाहिए।

2) विचाराधीन कागज या नई आवती अथवा उसी मिसिल पर पत्र व्यवहार भाग अथवा टिप्पणी भाग को ज्यों का त्यों उतारने का या उनका सार देने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

3) आदेश या सुझाव देते समय अधिकारी को अपनी टिप्पणी में पिछली टिप्पणियों में आई हुई बातों पर बल न देकर केवल वास्तविक मुद्दों तक सीमित रहना चाहिए जिन्हें वास्तव में वह प्रस्तुत करना चाहता है। यदि वह इससे पहले की टिप्पणी में सुझाई गई कार्रवाई से सहमत हो तो वह केवल हस्ताक्षर कर देता है।

4) यदि किसी अधिकारी को ऐसी फाइल पर टिप्पणी लिखनी हो जिसमें तथ्यों का क्रमिक सार मौजूद हो तो मामले के तथ्यों की ओर ध्यान दिलाते हुए उस सार के केवल उपयुक्त अंश का हवाला देना चाहिए और अपनी टिप्पणी में सार को दोहराना नहीं चाहिए।

5) अगर फाइल में तथ्यों का क्रमिक सार पहले से ही मौजूद न हो या फाइल की पिछली टिप्पणी इस काम को पूरा न करती हो तो अधिकारी को प्रस्तुत किए जाने वाले मामलों में स्वत: पूर्ण सार प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

6) यदि किसी मामले में कुछ स्पष्ट भूलों या गलत बयानों की ओर संकेत करना आवश्यक हो या उसमें व्यक्त किए किसी मत की आलोचना करनी हो तो इस बात का ध्यान रहे कि आपका अभिमत नम्र एवं संयत भाषा में हो और उसमें व्यक्तिगत आक्षेप बिलकुल न हों।

7) जब किसी विचाराधीन कागज में बहुत से महत्वपूर्ण मूद्दे उठाए गए हों और प्रत्येक मुद्दे की विस्तृत जाँच की जानी हो तथा उसके संबंध में आदेश दिए जाने आवश्यक हों तो अनुभाग की टिप्पणियों में प्रत्येक मुद्दे पर अलग-अलग टिप्पणी लिखी जाए।

8) टिप्पणियाँ आदर्श नोट शीट पर लिखी जाएँ।

9) उच्च अधिकारियों द्वारा मौखिक अनुदेश की पुष्टि-सामान्यत: सभी अधिकारियों को विभिन्न मामलों में कार्रवाई के लिए लिखित अनुदेश देने चाहिए, लेकिन जहाँ किसी मामले में परिस्थितिवश लिखित अनुदेश न दिए गए हों और मौखिक आदेश के अनुसार कार्रवाई की गई हो, वहाँ बाद में लिखित रूप में उसकी पुष्टि करा लेनी चाहिए। इसी प्रकार जब मंत्री महोदय के निजी स्टाफ का कोई सदस्य किसी अधिकारी को मंत्री की ओर से मौखिक आदेश देता है तो उसकी पुष्टि भी अधिकारी द्वारा बाद में लिखित रूप में करा ली जानी चाहिए।

10) तथ्यों का क्रमिक सार - किसी मामले से संबंधित फाइल प्रस्तुत करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि अधिकारी को विचार करने में सुविधा हो तथा कम से कम समय में मामले को समझ कर उस पर निर्णय ले सकें। बार-बार पीछे की टिप्पणियाँ देखने में समय नष्ट न हो, इसलिए तथ्यों का क्रमिक सार तैयार करके एक अलग आवरण में रख लेना चाहिए।

11) स्थायी निदेश फाइल - किसी एक अनुभाग का कई प्रकार के विषयों से संबंध होता है। इसलिए सुविधा के लिए प्रत्येक उपयुक्त विषय वर्ग के लिए एक स्थायी निदेश फाइल खोलनी चाहिए इस फाइल के तीन भाग होते हैं।

(क) विषय से संबंधित सिद्धांतो और नीतियों का क्रमिक सार।

(ख) विषयों और आदेशों की तारीख क्रम से पूरी नकल तथा

(ग) आदेश या अधिसूचनाएँ आदि जारी करते समय उपयोग में आने वाले नमूने के फार्म।

पहले भाग में क्रमिक सार में जहाँ टिप्पणियों और आदेशों का हवाला दिया जाएगा वहाँ हाशिए में इन नियमों और आदेशों की क्रम सं. और तारीख लिख दी जाएगी।

टिप्पणी - लेखन के स्तर

सामान्यतया टिप्पणी लेखन का कार्य दो स्तर पर किया जाता है:-

(i) अधिकारी स्तर पर

सफल लोग हमेशा दूसरों की मदद करने के अवसर खोजते रहते हैं।

(ii) सहायक स्तर पर

इन दोनों स्तरों पर जो टिप्पणियाँ लिखी जाती हैं उनमें लिखने के प्रकार में अंतर रहता है। अधिकारी स्तर की टिप्पणियों में क्रम संख्या (आवती) तथा पत्राचार भाग की पृष्ठ संख्या नहीं रहती। लेकिन सहायक स्तर की टिप्पणी में इन दोनों बातों का होना आवश्यक है।

आकार या संरचना की दृष्टि से टिप्पणियों का वर्गीकरण निम्नलिखित रूपों में भी कर सकते हैं।

प्रकार – टिप्पणी मुख्यत: तीन प्रकार की होती है:-

(1) **प्रशासनिक (नेमी) टिप्पणी**

1. **आदेशात्मक**
2. **व्याख्यात्मक**

नेमी टिप्पणियों में कहा जाए, चर्चा करें फाइल कर दीजिए, देख लिया आदि वाक्यांशों का प्रयोग अधिक होता है। ऐसी टिप्पणियों में आदेशात्मकता तथा सूचनापरकता रहती है और ये एक या दो वाक्यों तक सीमित रहती हैं।

(2) **स्वत: पूर्ण टिप्पणी** –

1. **अधिकारी स्तर पर**
2. **सहायक स्तर पर**

स्वत: पूर्ण टिप्पणी में निहित सूचना अपने आप में पूर्ण होती है। यह टिप्पणी अधिकारी तथा सहायक दोनों स्तर की होती है। स्वत: पूर्ण टिप्पणी में क्रम संख्या (आवती) पृष्ठ..... पत्राचार नहीं लिखा जाता यह किसी आवती पर आधारित न होकर परिस्थिति तथा आवश्यकता से उत्पन्न समस्या को हल करने के लिए होती है।

जब एक अधिकारी अपने ऊपर के अधिकारी को टिप्पणी प्रस्तुत करता है तब उसका स्वरूप सहायक स्तर की टिप्पणी से मिलता जुलता होता है क्योंकि वह अधिकारी अपने स्तर पर अपने सुझाव व विषय का विवरण ऊपर के अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत करता है। टिप्पणी का यह स्वरूप स्वतंत्र टिप्पणी के रूप में होता है। जैसे काम अधिक बढ़ जाने पर पदों के सृजन से संबंधित टिप्पणी अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत की जाए तो वह स्वतंत्र रूप की टिप्पणी होगी क्योंकि वह किसी पुरानी आवती के संदर्भ में नहीं है। ऐसी टिप्पणी ही वास्तव में स्वत: पूर्ण टिप्पणी कहलाती है। स्वत: पूर्ण टिप्पणी अधिकारी तथा उसके अधीन कार्य करने वाले सहायक आदि द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

(3) **आवती पर आधारित टिप्पणी** –

आवती पर आधारित टिप्पणियां सहायक स्तर पर ही तैयार की जाती हैं। ऐसी टिप्पणी का मुख्य उद्देश्य अधिकारी के समक्ष आवती के विवरण को कार्यालय में की जाने वाली कार्रवाई के संदर्भ में संक्षेप में प्रस्तुत करना होता है। इस प्रकार की टिप्पणी में सहायक अपने अधिकारी को आवती का क्रमांक व पत्राचार खंड का पृष्ठ लिखकर यह बताता है कि इसमें प्रेषक ने क्या माँग की है, उस माँग का क्या कारण बताया है, उसके संबंध में नियमों की क्या स्थिति है तथा कार्यालय में काम की स्थिति को देखते हुए उस माँग का औचित्य कितना है। अंत में टिप्पणीकार अपना सुझाव भी देता है और यदि उसे अधिकारी के अनुमोदन का पूरा विश्वास होता है तो वह उसके साथ उत्तर का मसौदा भी अनुमोदन के लिए प्रस्तुत कर देता है। इस प्रकार की टिप्पणी में निम्नलिखित पाँच चरणों का विशेष महत्व होता है और इसी कारण इनका समावेश आवश्यक माना जाता है।

आवती पर आधारित टिप्पणी के पाँच चरण

1. **आवती का विषय**
2. **कारण**
3. **नियम**
4. **कार्यालय में कार्य की स्थिति**
5. **सुझाव**

पहले दो चरणों में आवेदन किया है, बताया है, वाक्य-साँचों का प्रयोग अधिक होता है। तीसरे चरण में नियम है तथा किया जा सकता है चौथे चरण में है या नहीं तथा पाँचवें चरण में किया जा सकता है आदि वाक्य - साँचों का प्रयोग अधिक किया जाता है।

साभार
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान
राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय
भारत सरकार

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2017-18 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 85% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट	100%(द्विभाषी)	100%(द्विभाषी)	100%(द्विभाषी)
12	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन	100%(द्विभाषी)	100%(द्विभाषी)	100%(द्विभाषी)
13	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद		100%	

टीमवर्क बहुत जरूरी है इसके बिना ये लगभग असंभव है कि आप अपनी क्षमताओं के चरम पर पंहुचे।

वर्ष 2016-17 के दौरान कार्यालय में राजभाषा हिंदी में किए गए कार्यों एवं उपलब्धियों का विवरण।

राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु जांच-बिंदु बनाए गए तथा जांच-बिंदुओं का कड़ाई से पालन किया गया।

हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में ही दिए गए एवं धारा 3 (3) का पूर्णतः अनुपालन किया गया।

वर्ष के दौरान 80 प्रतिशत टिप्पणी हिंदी में लिखी गई।

वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए दिशा-निर्देशानुसार वर्ष के दौरान हिंदी की पुस्तकों पर 62 प्रतिशत राशि व्यय की गई।

प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गई। इन बैठकों में वर्तमान तिमाही की कार्यसूची पर चर्चा किए जाने के पूर्व पिछले तिमाही के कार्यवृत्त की अनुपालन रिपोर्ट पर चर्चा एवं समीक्षा की गई तथा कार्मिकों द्वारा हिंदी में किए गए कार्यों की मॉनिटरिंग भी की गई।

कम्प्यूटरों पर हिंदी में काम करने के लिए कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले सभी कम्प्यूटरों पर यूनीकोड की सुविधा उपलब्ध करवाई गई तथा सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को यूनीकोड में कार्य करने का प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। जिसके परिणामस्वरूप कार्यालयीन कार्य में हिंदी का प्रयोग पहले की तुलना में बढ़ा है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु कार्यालयीन काम काज मूल रूप से हिंदी में करने के लिए 04 कार्यशालाएं आयोजित की गई, जिनमें कुल 71 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। हमारा कार्यालय छोटा है, इसलिए इन कार्यशालाओं में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने लगभग हर बार भाग लिया है।

इस दौरान हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण लेखन एवं हिंदी वर्तनी शोधन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिनमें सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

दिनांक 01 सितम्बर, 16 को हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ किया। पखवाड़े के दौरान अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दो वर्गों में (हिंदी भाषी एवं अन्य भाषा-भाषी) हिंदी तात्कालिक भाषण, हिंदी समाचार वाचन, हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तथा हिंदी अंताक्षरी की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। 14 सितम्बर,16 को हिंदी दिवस का मुख्य समारोह आयोजित किया गया। जिसमें प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने एवं सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने के उद्देश्य से कार्यालय में नकद पुरस्कार प्रोत्साहन योजना लागू है। इस योजना के अंतर्गत 09 कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय को नियमित रूप से राजभाषा की तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑन लाइन भेजी गई ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (दिल्ली) को राजभाषा हिंदी के प्रगति की छमाही प्रगति रिपोर्ट भेजी गई तथा इनके द्वारा आयोजित की गई बैठक तथा सम्मेलन में भाग लिया गया।

कार्यालय में राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करने के पूर्ण प्रयास किए गए।

उल्लेखनीय कार्य

कार्यालय में हिंदी भाषा का प्रशिक्षण पूरा कर लिया गया है।

कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले सभी कोड, मैनुअल एवं फार्म द्विभाषी है।

हिंदी में मूल पत्राचार 81 प्रतिशत किया गया।

वर्ष 2015-16 के दौरान उत्तर क्षेत्र-1 के 'क' क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा कार्यालय को द्वितीय पुरस्कार के लिए चुना गया। आगरा में दिनांक 06 अक्टूबर, 16 को आयोजित उत्तर क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन व पुरस्कार वितरण समारोह में द्वितीय पुरस्कार के लिए माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री किरेन रीजीजू जी के कर कमलों से पुरस्कार स्वरूप कार्यालय को राजभाषा शील्ड तथा सहायक हिंदी अधिकारी को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया, जिसे क्रमशः श्री राजीव रंजन, प्रबंधक (आईटी) एवं सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी ने ग्रहण किया।

(एच.भराली)

छोटी अवधि के लिए संतुष्टि को खुद से दूर रखने के लिए अनुशासित रहने की क्षमता रखना ताकि लम्बी अवधि में सफलता का मजा लिया जा सके, यह सफलता की अनिवार्य शर्त है।

वर्ष के दौरान हिंदी में कार्य करने के लिए लागू नकद पुरस्कार प्रोत्साहन योजना

कार्यालय में टिप्पण और आलेखन में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय वर्ष 2013-14 से कार्मिकों के लिए नकद पुरस्कार प्रोत्साहन योजना लागू की गई है। जिसके अंतर्गत हिंदी में 10,000 (दस हजार) शब्द लिखने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें नकद पुरस्कार से पुरस्कृत किए जाने का प्रावधान है।

वर्ष 2016-17 के दौरान प्रोत्साहन योजना के नियमों का पालन करते हुए पुरस्कारों का निर्धारण किया गया, जिसके अनुसार निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी दिवस, 2017 के मुख्य समारोह में पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे।

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम	पुरस्कार	राशि
1	श्री जयंत गुप्ता चौधुरी, सहा. लेखा अधिकारी	प्रथम	रूपए 5000/-
2	श्री प्रदीप कुमार शर्मा, वरि. प्रारूपकार	प्रथम	रूपए 5000/-
3	श्रीमती वांगमु रीजीजू, कनि. अभियंता (ई/एम)	द्वितीय	रूपए 3000/-
4	श्री सुभाष चंद शर्मा, अभियांत्रिकी पर्यवेक्षक	द्वितीय	रूपए 3000/-
5	श्री रूपक कुमार चंद्रा, सहायक-III	द्वितीय	रूपए 3000/-
6	श्रीमती एलिजाबेथ पिरबट, प्रबंधक (ई)	तृतीय	रूपए 1500/-
7	श्री नव कमल बोरा, प्रबंधक (सी)	तृतीय	रूपए 1500/-
8	श्री आशीष भट्टाचार्जी, वरि. लेखाकार	तृतीय	रूपए 1500/-
9	श्री पवन कुमार वशिष्ट, वरि. प्रारूपकार	तृतीय	रूपए 1500/-

सबसे बड़ा धन स्वस्थ तन-मन

एक सेठ ने निश्चय किया कि वह अपने पुत्र के लिए ऐसी समझदार वधू लाएंगे जिसके पास हर समस्या का समाधान हो। सेठ जब भी किसी लड़की को देखने जाते तो प्रश्न करते कि जाड़ा, गर्मी और बरसात में सबसे अच्छा मौसम कौन सा है? एक लड़की ने उत्तर दिया-गर्मी का मौसम सबसे अच्छा है। उसमें हम लोग पहाड़ पर घूमने जाया करते हैं। सुबह-सुबह टहलने में काफी सुख मिलता है। दूसरी लड़की ने कहा-मुझे तो जाड़े का मौसम पसंद है। इस मौसम में तरह-तरह के पकवान बनते हैं। हम जो भी खाते है, सब आसानी से पच जाता है। इस मौसम में गर्म कपड़ों का अपना ही सुख है। तीसरी लड़की ने कहा-मुझे तो वर्षा ऋतु सबसे ज्यादा पसंद है। इस मौसम में पृथ्वी पर चारों ओर हरियाली होती है। खेतों-खलिहानों से मिट्टी की सोंधी-सोंधी खुशबू आती है। कभी-कभी तो उसमें इतनी महक होती है कि उसे खाने की इच्छा होती है। आसमान में इंद्रधनुष देखकर मन आनंदित हो जाता है। बारिश में भीगने का अपना ही मजा है। सेठ को ये बातें अच्छी तो लगी पर वह संतुष्ट नहीं हुए। वह थोड़ा निराश भी हो गए। उन्होंने लड़कियां देखने का काम बंद कर दिया। तभी एक दिन एक रिश्तेदार के घर उनकी मुलाकात एक लड़की से हुई जिससे उन्होंने वही सवाल दोहराया। लड़की ने जवाब दिया-अगर हमारा शरीर स्वस्थ है तो सभी मौसम अच्छे हैं। अगर तन-मन स्वस्थ नहीं है तो हर मौसम बेकार है। सेठ इस उत्तर से बेहद प्रभावित हुए। उन्होंने उस लड़की को अपनी पुत्रवधू बना लिया।

सफल लोग बस वे होते हैं जिनकी सफल आदतें होती हैं।

स्वच्छ भारत अभियान

हमारी आन, बान और शान
हमारा स्वच्छ भारत अभियान
अस्वच्छ माहौल में न ले पाएंगे सांस
अस्वस्थ माहौल में न कर पाएंगे योगाभ्यास
मंदिर के प्रांगण में फैलाकर गंदगी,
कैसे कर पाएंगे हम भगवान की बंदगी?
स्वच्छता को अपनाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है।

महात्मा गांधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। उन्होंने ''स्वच्छ भारत'' का सपना देखा था, जिसके लिए वह चाहते थे कि भारत के सभी नागरिक एक साथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने के लिए कार्य करें।

महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया और इसके सफल कार्यान्वयन हेतु भारत के सभी नागरिकों से इस अभियान से जुड़ने की अपील की। इस अभियान का उद्देश्य अगले पांच वर्ष में स्वच्छ भारत का लक्ष्य प्राप्त करना है ताकि बापू की 150वीं जयंती को इस लक्ष्य की प्राप्ति के रूप में मनाया जा सके।

स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य केवल अपने आसपास की सफाई करना ही नहीं है अपितु नागरिकों की सहभागिता से अधिक से अधिक पेड़ लगाना, कचरा मुक्त वातावरण बनाना, शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर एक स्वच्छ भारत का निर्माण करना है। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वच्छ भारत के निर्माण एवं देश की छवि सुधारने का यह सही समय एवं अवसर है।

नीपको, भी इस अभियान में अपनी पूरी जिम्मेदारी को निभाते हुए इसके सफल कार्यान्वयन के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की राह में अग्रसर है।

शांतनु बेजबरूवा

आप जो कुछ भी करते हैं उसकी शुरूआत इच्छा या भय की भावना के साथ शुरू होती है।

गूगल वॉइस टाइपिंग

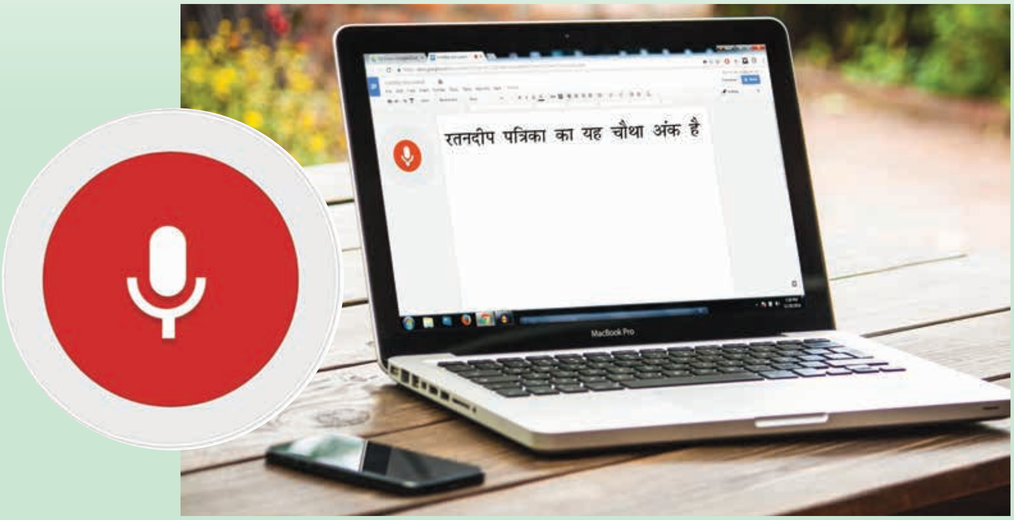

कुछ समय पहले मुझे एक राजभाषा सम्मेलन में जाने का मौका मिला। सम्मेलन में एक सत्र तकनीकी से संबंधित था। इस सत्र में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक महोदय श्री केवल कृष्ण जी ने गूगल वॉइस टाइपिंग पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया, उन्होंने बताया कि अब हिंदी में टाइप करना बहुत ही आसान हो गया है। सभी को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अगर आपको की-बोर्ड के माध्यम से हिंदी में टाइप करना नहीं आता तो कोई बात नहीं, आप सभी गूगल वॉइस टाइपिंग की मदद से हिंदी में टाइपिंग कर सकते है और अपने द्वारा हिंदी में किए जाने वाले कार्यालयीन कार्यों को आसानी से पूरा कर सकते है, जब उन्होंने प्रेजन्टेशन के माध्यम से स्क्रीन पर आवाज के माध्यम से हिंदी टाइपिंग करके दिखाई तो सभी ने जोरदार करतल ध्वनि से अपनी खुशी जाहिर की।

उसी से प्रेरित होकर मैंने अपने कार्यालय में गूगल वॉइस टाइपिंग विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की और अपने प्रेजन्टेशन के माध्यम से सभी प्रतिभागियों को इस तकनीक के प्रयोग के बारे में विस्तार से बताया, सभी के लिए यह एक नया अनुभव था, प्रतिभागियों ने इसका अभ्यास भी किया। सभी ने इस तकनीक की सराहना की और इसे बहुत ही उपयोगी बताया। हमारी पत्रिका के माध्यम से मैं आप सभी को गूगल द्वारा उपलब्ध करवाई गई वॉइस टाइपिंग के बारे में बताने जा रही हूं जिसके द्वारा अब आप अपनी आवाज के साथ हिंदी में टाइप कर सकते है। गूगल वॉइस टाइपिंग एक ऐसा सॉफ्टवेयर है जिसकी मदद से कोई भी व्यक्ति बड़ी आसानी से अपनी आवाज के साथ हिंदी में टाइप कर सकता है। फिलहाल यह सुविधा क्रोम ब्राउजर में ही उपलब्ध है। इसके लिए आपको कम्प्यूटर/लैपटॉप, नेट कनेक्शन और माइक्रोफोन की आवश्यकता होगी। इसमें ऑफलाइन काम नहीं किया जा सकता। इसके प्रयोग के लिए आपका जीमेल एकाउंट होना आवश्यक है।

- सबसे पहले यह सुनिश्चित करें की आपके कम्प्यूटर से एक माइक्रोफोन तथा नेट कनेक्शन जुड़ा हुआ है और वह काम करता है।
- क्रोम ब्राउजर में https://www.google.co.in खोलें।
- अब आप जीमेल में अपना एकाउंट बना लें और उसे साइन इन करें। अगर आपका जीमेल एकाउंट पहले से बना है तो सीधे साइन इन करें।

उस इंसान को हराना मुश्किल है, जो कभी हार नहीं मानता।

- गूगल एप पर क्लिक करें।
- उसके बाद गूगल डॉक्स एप पर क्लिक करें।
- गूगल डॉक्स में एक नया दस्तावेज खोलें।
- फाइल में जाए, फिर भाषा में जाकर हिंदी भाषा का चयन करें।
- टूल में जाकर वॉइस टाइपिंग पर क्लिक करें ।
- बाईं ओर आपको एक पॉप-अप माइक्रोफोन बॉक्स दिखाई देगा, सुनिश्चित कर लें कि उसमें हिंदी लिखा हुआ दिखाई दे रहा हो अगर उसमें हिंदी लिखा नहीं दिखाई दे रहा है तो उसमें हिंदी भाषा को चुनें।
- अब आप अपने शब्दों को दस्तावेज पर लिखित रूप में लाने के लिए तैयार है तो माइक्रोफोन बॉक्स पर क्लिक करें।
- अब सामान्य गति और वोल्यूम से स्पष्ट रूप से हिंदी में बोलना शुरू करें।
- आपके शब्द आपके सामने बिना हाथों से टाइप किए आपके स्क्रीन पर दिखाई देने शुरू हो जाएंगे।
- आवाज के साथ टाइप करते हुए अगर कोई शब्द या वाक्य गलत हो जाए तो बोलना बंद करके जहां पर गलती हुई है, वहां पर कर्सर ले जाकर उस शब्द या वाक्य को सिलेक्ट करके माइक्रोफोन से पुन: बोलें गलती में सुधार अपने आप हो जाएगा। गलती सुधारने के बाद, आप आवाज टाइपिंग जारी रखना चाहते हैं तो जहां से टाइपिंग दुबारा करना चाहते है, वहां पर कर्सर वापस ले जाकर बोलें।
- जब आपका काम पूरा हो जाए तो आप उसे चैक करके देख लें। यदि आप उसमें कुछ और लिखना चाहते तो जहां पर लिखना चाहते वहां पर पुन: कर्सर ले जाकर बोलें तो बोली गई बात उसमें टाइप हो जाएगी।
- जब आप का काम पूरा हो जाए तो रोकने के लिए माइक्रोफोन पर पुन: क्लिक करें।
- अब इस पूरे काम को कॉपी करके आप अपने वर्ड डॉक्यूमेंट में ले जा कर पेस्ट कर सकते है। इसे आप ईमेल भी कर सकते है या इसका प्रिंट भी ले सकते है।
- गूगल वॉइस टाइपिंग से आप उन सभी भाषाओं में टाइप कर सकते हैं जो भाषाएं पॉप-अप माइक्रोफोन बॉक्स में उपलब्ध है।

आप सब भी इस तकनीक का लाभ उठाएं।

एंड्रॉयड फोन पर भी आप वाइस टाइपिंग कर सकते है।

यदि मोबाइल फोन में Android 7.0 OS है तो Setting >> Language and Input >> Google Voice Typing विकल्प को चुनें। Voice के अंतर्गत Language: हिंदी (भारत) का चयन करें। एक समय पर एक ही भाषा का चयन कर सकते हैं।

जब भी टाइप करना हो माइक्रोफोन के बटन पर क्लिक करें और सामान्य गति और वोल्यूम से स्पष्ट रूप से अपना पाठ बोलें, इससे आप SMS, WhatsApp, E-mail, Google Docs आदि पर वाइस टाइपिंग कर सकेंगे। Google साइट के माइक्रोफोन के बटन पर क्लिक करके आप बोल कर कोई भी साइट सर्च कर सकते हैं।

सुनीता रानी सिन्हा

योजना बनाने में लगाया गया हर एक मिनट कार्य पूर्ण होने में 10 मिनट बचाता है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय कृत चन्द्रगुप्त नाटक: बाल स्वयंसेवकों के लिए एक भेंट

वर्ष 2017 भारतीय राजनीति को नया वैचारिक धरातल देनेवाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्मशती वर्ष है। विगत 25 सितंबर 2016 को उनकी सौंवी जन्म-जयंती थी। सुविधाओं में पलकर कोई भी सफलता पा सकता है; पर अभावों के बीच रहकर शिखरों को छूना बहुत कठिन है। भारत के राजनीतिक इतिहास के पितृ पुरुष पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक राजनेता के साथ-साथ कुशल संगठक तथा मूर्धन्य साहित्यकार भी थे। साहित्य की हर विधा पर उनकी समान पकड़ थी। कहानी, नाटक, कविता और यात्रा वृतांत लिखने में उनको महारत हासिल था। ऐसे कई उदाहरण देखने को मिल जाएंगे जो उक्त बातों की पुष्टि करते हैं। उनके साहित्य-सृजन की कड़ी में सबसे महत्वपूर्ण स्थान 'चंद्रगुप्त' का है। नाट्य विधा में लिखित यह पुस्तक हिंदी साहित्य की उत्कृष्ट धरोहर है। पंडित जी ने इस नाटक के माध्यम से चंद्रगुप्त को केंद्र में रखकर राष्ट्र प्रेम को रेखांकित किया। चंद्रगुप्त के रूप में एक ऐसे नायक को गढ़ा जो राष्ट्रवाद का पर्याय था। पंडित जी की इस कृति को रचने के पीछे एक प्रेरणा थी।

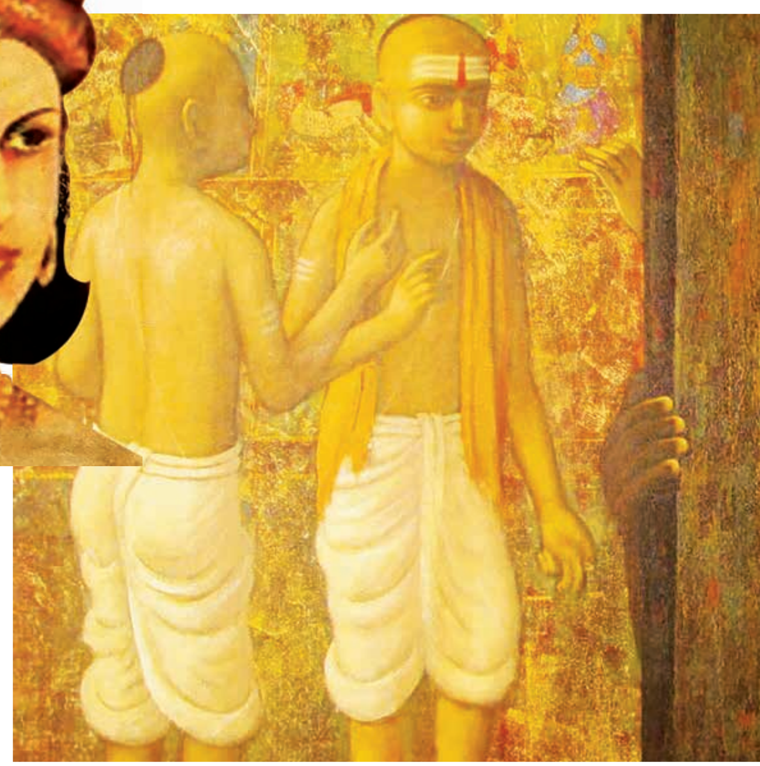

बात उन दिनों की है जब पंडित जी उत्तर प्रदेश के सह प्रांत प्रचारक थे। एक दिन बैठक के दौरान तत्कालीन प्रांत प्रचारक पूज्य श्री भाऊराव देवरस ने चिंता व्यक्त की कि शाखाओं में बाल स्वयंसेवक तो आते हैं, लेकिन हमारे विचार बाल-सुलभ भाषा में उपलब्ध नहीं हैं। वास्तव में बाल-साहित्य की बहुत आवश्यकता है। पंडित जी ने इस बात को बहुत गंभीरता से लिया और पूरी रात जागकर लिखते रहे, अगले दिन सुबह पूज्य भाऊराव देवरस को अपनी कृति सौंपते हुए बोले देखिए बाल स्वयंसेवकों के लिए यह पुस्तक कैसी रहेगी? यह उनकी पहली पुस्तक थी जो 1946 में प्रकाशित हुई थी। दरअसल इस पुस्तक की रचना का मूल उद्देश्य तो बाल स्वयंसेवकों में राष्ट्र की भावना को जागृत करना था। परंतु पंडित जी ने इस नाटक के माध्यम से कई लक्ष्यों को साधने की कोशिश की। एक तो बाल स्वयंसेवकों को पढ़ने के प्रति ललक

स्पष्ट लक्ष्य वाले व्यक्ति छोटी अवधि में इतना कुछ अचीव कर लेते हैं
जितना बाकी के लोग कभी सोच भी नहीं सकते।

पैदा हो और जब वो पढ़ने के लायक हो जाएं तो उनको अपनी जिम्मेदारियों का भी भान हो। इस उपन्यास के माध्यम से कुशल मार्गदर्शन की बुनियाद भी गढ़ी गई और जीवन में योग्य व्यक्ति का मार्ग दर्शन करने के लिए प्रेरित भी किया गया।

इस नाटक का सारा तथ्य ऐतिहासिक और प्रमाणिक है, पंडित जी ने बस उसमें भाषा की संजीवनी डालने का काम किया। उन्होंने चंद्रगुप्त के चरित्र में राष्ट्रवाद का रंग भर के एक ऐसा नायक तैयार करने की कोशिश की जो आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा बनने का काम करे। इस नाटक में कहीं भी दरबारी भाषा का उपयोग नहीं किया गया है, जैसा कि कालांतर में अपने सामंतो को खुश करने के लिए कवियों और लेखकों द्वारा किया जाता रहा है। पंडित जी ने इस विधा के माध्यम से राष्ट्रवाद को उकेरने की कोशिश की है। एक सैनिक जो अपने राज्य के प्रति सोचता था। उसके मन में राष्ट्र प्रेम की भावना कहां से जागृत हुई, इस नाटक में इसी तथ्य को उकेरने की कोशिश की गई है। क्योंकि पंडित जी का भी कहना था कि सच्चा सामर्थ्य राज्य में नहीं राष्ट्र में ही रहता है। वे अक्सर कहा करते थे कि ''राष्ट्रीय समाज राज्य से बढ़कर है, इसलिए हमारे लिए राष्ट्र आराध्य होना चाहिए। उनका मानना था कि जो राष्ट्र के प्रेमी हैं, वे राजनीति के पहले राष्ट्र भाव की आराधना करते हैं। राष्ट्र ही एकमेव सत्य है। इस सत्य की उपासना करना सांस्कृतिक कार्य कहलाता है। राजनीतिक कार्य भी तभी सफल हो सकते हैं, जब इस प्रकार के प्रखर राष्ट्रवाद से युक्त सांस्कृतिक कार्य की शक्ति उसके पीछे सदैव विद्यमान रहे"।

इस कृति में उक्त बातें पंडित जी ने अपने अन्य पात्र चाणक्य के माध्यम से कहलवाने की कामयाब कोशिश की है। नाटक के प्रारंभ में पडित जी भारत के संपन्नता का वर्णन करते हुए वर्तमान से तुलना करते हैं। नाटक के अनुसार उस समय अकेले मगध साम्राज्य के पास इतना धन था कि अगर पूरी दुनिया में बांटा जाता तो हर व्यक्ति के हिस्से 50 लाख रूपए आते और केवल भारत में इसको बांटा जाता तो हर व्यक्ति के हिस्से ढाई करोड़ रुपया आता। भारतीय इतिहास में चंद्रगुप्त एक ऐसा पात्र था जो एक साधारण सैनिक से मगध का राजा बना और एक आदर्श राजा का प्रतिमान स्थापित किया। एक ऐसे राज्य को अपने रण कौशल से डूबने से बचाया जो अपने राजा के एयाशियों की वजह से गर्त में जा रहा था। पंडित जी चंद्रगुप्त की व्याख्या करते हुए लिखते हैं, "वह ऐसा समय था जब आत्मसम्मान की रक्षा करने वाले और उसको मिटाने वालों में स्वाभाविक ही संघर्ष छिड़ गया। जगह-जगह आकाश की ओर उठने वाले धुएं ने बताया कि अंदर आग सुलग रही है। लोगों ने इसी धूम्रपुंज में उठते हुए एक भव्य मूर्ति को देखा। यही है हमारा शासक चंद्रगुप्त मौर्य"।

नाटक के दूसरे खंड में पंडित जी ने चंद्रगुप्त के गुरु चाणक्य और शीलभद्र के बीच हुए वार्तालाप के माध्यम से राष्ट्रवाद की जो परिभाषा दी है, वह अनुकरणीय है। शीलभद्र कहते हैं, 'यह असत्य भाषण मैं कैसे करूंगा आर्य' उस पर जो चाणक्य ने कहा वह प्रखर राष्ट्रवाद का सबसे जीवंत उदाहरण है, उन्होंने कहा "यह समय सत्य और असत्य विचारने का नहीं है, वत्स! आज अगर तुम इस असत्य को लेकर बैठ जाओगे तो कल पूरे मगध पर यवनों का आधिपत्य हो जाएगा" राष्ट्रवाद की इससे जीवंत परिभाषा कुछ हो ही नहीं सकती, जो पंडित जी ने अपने पात्र चाणक्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यह केवल नाटक नहीं बल्कि राष्ट्रवाद की वह प्राथमिक पाठशाला है, जिससे होकर गुजरने वाले हर विद्यार्थी के मन में राष्ट्रवाद प्रबल हो जाएगा तथा वह हर समय राष्ट्र की रक्षा और समाज के उन्नयन के बारे में ही विचार करेगा।

वांगमु रीजीजू

साधारण दिखने वाले लोग ही दुनिया के सबसे अच्छे लोग होते हैं :
यही वजह है कि भगवान ऐसे बहुत से लोगों का निर्माण करते हैं।

हिंदी कार्यशाला

कार्यालय में दिनांक 22.06.16 को "कम्प्यूटर पर किए जाने वाले कार्यालयीन कार्यों में हिंदी यूनीकोड का प्रयोग" विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य अधिकारियों और कर्मचारियों की कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करने की झिझक को दूर करना था। सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहा. हिंदी अधिकारी ने कार्यशाला में भाग लेने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों को कम्प्यूटर पर यूनीकोड का प्रयोग करते हुए हिंदी में पत्राचार, ई-मेल भेजने आदि के बारे में पुनः विस्तार से बताया और अभ्यास भी करवाया। कार्यशाला में 05 अधिकारियों एवं 08 कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यालय में दिनांक 27.09.16 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला के दो सत्र थे। पहले सत्र में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) के उप निदेशक (कार्यान्वयन) महोदय श्री प्रमोद कुमार शर्मा जी ने प्रतिभागियों को राजभाषा नियम एवं अधिनियम के बारे में विस्तार से जानकारी दी। दोपहर के भोजन के उपरांत दूसरे सत्र में विद्युत मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (रा.भा.) महोदय डॉ. आर.सी. शर्मा जी ने प्रतिभागियों को हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन का अभ्यास करवाया। कार्यशाला में 09 अधिकारियों और 14 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में दी गई ज्ञानवर्धक जानकारियों का लाभ सभी ने उठाया। कार्यशाला के अंत में वरि. प्रबंधक (मा.सं.) श्री शांतनु बेजबरूवा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। कार्यशाला का संचालन सहायक हिंदी अधिकारी सुश्री सुनीता रानी सिन्हा ने किया।

योजनाएं बनाना आसान हैं किंतु क्रियान्वयन करना उतना ही कठिन है।

कार्यालय में दिनांक 22.12.16 को "कार्यालयीन कार्यों के लिए ई-मेल हिंदी में भेजना" विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य

अधिकारियों और कर्मचारियों को कम्प्यूटर से हिंदी में ई-मेल भेजना सीखाना था। सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहा. हिंदी अधिकारी ने कार्यशाला में भाग लेने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों को कम्प्यूटर पर यूनीकोड का प्रयोग करते हुए हिंदी में ई-मेल भेजने के बारे में पुनः विस्तार से बताने के साथ ही रिपोर्ट आदि संलग्न कर भेजने का पूर्ण रूप से अभ्यास भी करवाया। कार्यशाला में 07 अधिकारियों एवं 10 कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 28.02.17 को "कार्यालयीन कामकाज में सरल हिंदी का प्रयोग" विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में वक्ता के रूप में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान से श्रीमती वीना शर्मा, सहायक निदेशक को आमंत्रित किया गया। कार्यशाला के आरंभ में सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी ने सहायक निदेशक महोदया एवं कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत किया एवं सहायक निदेशक महोदया से कार्यशाला प्रारंभ करने के लिए आग्रह किया। कार्यशाला का प्रारंभ करते हुए सहायक निदेशक महोदया ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है, इसलिए हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम सभी अपना कार्यालयीन कामकाज हिंदी में ही करें, उन्होंने कहा कि इसके लिए आप सभी सरल हिंदी का प्रयोग करें और जिन अंग्रेजी शब्दों के हिंदी शब्द समझ नहीं आ रहे हो उनको वैसे ही देवनागरी लिपि में लिख दें। सहायक निदेशक महोदया ने कार्यालयीन कामकाज में प्रयोग में लाए जाने वाले बहुत सारे शब्दों के सरल हिंदी शब्द बताए। इसके साथ ही उन्होंने टिप्पणी लिखने का सही तरीका भी समझाया और सरल शब्दों का प्रयोग करते हुए उन्होंने सभी प्रतिभागियों को टिप्पण लिखने का अभ्यास भी करवाया। सभी प्रतिभागियों ने कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाया और इसे उपयोगी बताया। इस कार्यशाला में 06 अधिकारियों और 12 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला के समापन पर सहायक हिंदी अधिकारी ने सभी को धन्यवाद देते हुए सहायक निदेशक महोदया का आभार प्रकट किया।

अहंकारी मत बनो। दिखावा मत करो। हमेशा कोई न कोई तुमसे बेहतर होता है।

यूपीआई

यूपीआई यानी यूनीफाइड पेमेंट इंटरफेस (Unified Payment Interface) यह पैसे भेजने और पैसे प्राप्त का एक सिस्टम है। अभी तक NEFT, RTGS और IMPS सिस्टम के जरिए पैसा भेजा जाता रहा है। यूपीआई इनसे ज्यादा एडवांस्ड तरीका है। इस पेमेंट सिस्टम को इस तरह से बनाया गया है कि आम लोग भी इसे आसानी से इस्तेमाल कर सकें। यहां मैं यूपीआई की कुछ खास बातों को आपसे साझा कर रहा हूं।

यूपीआई एक पेमेंट सिस्टम है और इसे किसी भी एप का हिस्सा बनाया जा सकता है। इसके बनाने वाली एजेंसी NPCI (National Payment Corporation of India) यूपीआई प्लेटफॉर्म का लाइसेंस देती है। बैंकों को ही यूपीआई सिस्टम का इस्तेमाल करने की इजाजत मिलती है। लेकिन बैंक चाहें तो अपने नाम पर कुछ और लोगों को यूपीआई का इस्तेमाल करने दे सकते हैं। लचीले नियम की वजह से फिलहाल कई यूपीआई एप हैं। कुछ बैंकों ने अपने पुराने एप में ही यूपीआई सिस्टम को अपना लिया है। कुछ बैंक यूपीआई प्लेटफॉर्म वाला नया एप लेकर आए हैं। जैसे ICICI बैंक ने अपने पुराने एप iMobile में ही यूपीआई को मिला लिया है। वहीं एसबीआई ने नया एप एसबीआई पे (SBI Pay) लॉन्च किया है।

यूनीफाइड पेमेंट इंटरफेस सिस्टम मोबाइल एप पर आधारित है। यानि ये इंटरनेट इस्तेमाल करने वाले स्मार्टफोन में काम करता है। यूपीआई को इस्तेमाल करने के लिए आपका स्मार्टफोन इंटरनेट से जुड़ा होना जरूरी है। फिलहाल यूपीआई एप एन्ड्रॉएड ऑपरेटिंग सिस्टम के लिए ही बनाया गया है। गूगल प्ले स्टोर में अगर आप UPI सर्च करेंगे तो आपको कई यूपीआई एप मिल जाएंगे। वैसे ज्यादातर लोग अपने ही बैंक का एप इस्तेमाल करना पसंद करते हैं। आप दूसरे बैंकों के एप को भी आजमाएं और जिसमें सबसे ज्यादा सहूलियत दिखे उसे इस्तेमाल करें। ग्राहक को अपने बैंक का यूपीआई एप इस्तेमाल करने की बाध्यता नहीं है। दुनिया के 80% फोन एन्ड्रॉएड ऑपरेटिंग सिस्टम का इस्तेमाल करते हैं। भविष्य में यूपीआई एप आईफोन और विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम में भी काम करेगा।

यूपीआई पेमेंट सिस्टम आपके मोबाइल नंबर के जरिए आपके खाते की जानकारी लेता है। मोबाइल नंबर के जरिए ये पक्का करता है कि आप अपने ही खाते से जुड़ें हैं। आप जानते ही होंगे कि आजकल सभी बैंक ग्राहकों से उनका मोबाइल नंबर मांगते हैं। यही नंबर उनके खाते से लिंक हो जाता है। यूपीआई इसी लिंक्ड मोबाइल के जरिए आपके खाते की जानकारी जुटाता है। इसका मतलब ये भी है कि अगर आपने बैंक में अपना मोबाइल नंबर नहीं दिया है तो आप यूपीआई का फायदा नहीं ले पाएंगे। इतना ही नहीं अगर आप अपने स्मार्टफोन से अपना सिम निकाल लेंगे तो भी ये एप काम नहीं करेगा।

यूपीआई के जरिए आप देश में किसी भी बैंक खाते में पैसे भेज सकते हैं। ऐसा नहीं है कि अगर आप स्टेट बैंक के ग्राहक हैं तो सिर्फ स्टेट बैंक के ग्राहकों को ही पैसे भेज पाएंगे। बल्कि इसके माध्यम से किसी भी बैंक के ग्राहक को पैसे भेजने की आजादी है।

जैसा कि मैंने पहले बताया है कि गूगल प्लेस्टोर में ढेरों यूपीआई एप हैं और आप इनमें से कोई भी इस्तेमाल कर सकते हैं। एक एसबीआई का ग्राहक, एक्सिस बैंक का यूपीआई एप 'एक्सिस पे' इस्तेमाल कर सकता है। HDFC बैंक का ग्राहक एसबीआई पे इस्तेमाल कर सकता है। यानि की किसी भी एप को इस्तेमाल करने की पूरी छूट है। आप किसी भी एप से अपने खाते को जोड़ सकते हैं।

कुछ सार्थक हासिल करने से पहले आपको बहुत से छोटे प्रयास करने होते हैं
जिसे न कोई देखता है न कोई सराहता है।

यूपीआई की सबसे बड़ा खूबी है कि इसके जरिए पैसा भेजने के लिए बैंक खाता जानना जरूरी नहीं है। यानि अगर आपको किसी से पैसा चाहिए और आप उसे बैंक खाता नहीं बताना चाहते हैं तो आप यूपीआई का इस्तेमाल कीजिए। यूपीआई एप के जरिए आप बिना बैंक खाता जाने भी पैसा ट्रांसफर कर सकते हैं। दरअसल ये एप बैंक खाते के अलावा वर्चुअल पेमेंट एड्रेस (VPA) के जरिए भी पैसा ट्रांसफर करता है।

आजकल मोबाइल वॉलेट भी खूब पापुलर हो रहे हैं। पेटीएम को तो आप जानते ही होंगे। ये वॉलेट भी पैसा भेजने के काम आते हैं। लेकिन यूपीआई इनसे ज्यादा फायदेमंद हैं क्योंकि यूपीआई का इस्तेमाल करने के लिए आपको खाते से पैसा हटाकर किसी वॉलेट में ट्रांसफर करने की जरूरत नहीं होती है। बल्कि आप जब भी पैसा भेजते हैं तभी ये आपके खाते से निकलता है। यानि आपको ब्याज का नुकसान नहीं होता है।

ये यूपीआई की सबसे अनूठी बात है। आप यूपीआई के जरिए पैसा मांग भी सकते हैं। मान लिया आपको अपने किसी परिचित से अपने उधार पैसै वापस चाहिए। लेकिन आप उसे फोन करने में हिचकिचा रहे हैं तो यूपीआई का सहारा लीजिए। यूपीआई एप (UPI App) में Collect Money ऑप्शन के जरिए आप अपने दोस्तों से तय रकम मांग सकते हैं। आपके दोस्तों को यूपीआई के जरिए एक नोटिफिकेशन मिलेगा। इसे खोलने पर उनके पास आपकी request को Approve या Reject करने का ऑप्शन होगा।

इसी तरह से कोई भी व्यापारी अपने ग्राहकों से पैसा मांग सकता है। ग्राहक को सिर्फ व्यापारी के रिक्वेस्ट को Approve करने की जरूरत होगी।

बहुत से लोग मोबाइल या इंटरनेट का इस्तेमाल करने से घबराते हैं। उन्हें ऑनलाइन ट्रांजैक्शन से फ्रोड होने के डर सताता है। उनका डर लाजिमी भी है क्योंकि ऑनलाइन फ्रोड की कई घटनाएं सुनाई पड़ती हैं। हालांकि ज्यादातर मामलों में ग्राहकों की लापरवाही होती है। वैसे यूपीआई में तीन स्तरों की सुरक्षा की गई है।

1. यूपीआई एप तभी आपके खाते से जुड़ पाएगा जब स्मार्टफोन में वही नंबर होगा जो आपके बैंक खाते में रजिस्टर है। यानि आपके फोन से ही ट्रांजैक्शन हो सकेगा
2. यूपीआई एप को खोलने के लिए भी एक पासवर्ड लगता है ये पासवर्ड सिर्फ आपको पता होना चाहिए।
3. आप जब किसी को पैसे भेजेंगे तो MPIN डालना होगा। ये चार अंकों का पिन होता है जो सिर्फ मोबाइल बैंकिग में इस्तेमाल होता है। ध्यान रखें ये ATM पिन नहीं है। MPIN यूपीआई एप से ही generate किया जा सकता है।

अब आपके मन में यह सवाल आ रहा होगा कि इस यूपीआई के लिए कितना खर्च आएगा। आखिर बैठे-बैठे पैसे भेजने के इस तरीके का कोई खर्च तो होगा ही। आपका सोचना बिल्कुल सही है। इस पूरे सिस्टम को मेंटेन करने और चलाने में NPCI और बैंक दोनों का खर्च आता है। लेकिन आपको ज्यादा चिंतित होने की जरूरत नहीं है। क्योंकि लाखों लेनदेन के चलते एक लेनदेन की लागत काफी कम पड़ती है। माना जा रहा है कि NPCI की एक ट्रांजैक्शन में 40-50 पैसे का खर्च आएगा। यानि कि आपको भी करीब इतना ही देना होगा।

लेकिन अभी आपके लिए खुशखबरी है। फिलहाल ये ट्रांजैक्शन पूरी तरह से मुफ्त है। UPI **ट्रांजैक्शन पर कोई चार्ज नहीं लग रहा है। आगे अगर कोई चार्ज लगा तो ये पचास पैसे के करीब ही होगा।**

विकाश मनी भारद्वाज

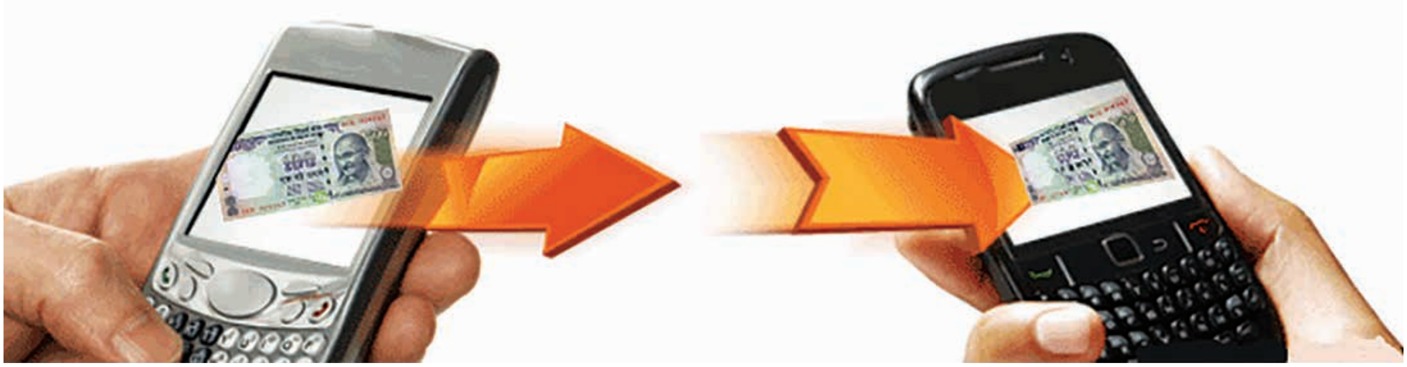

सफलता की कुंजी है अपने चेतन मन को उन चीजों पर केन्द्रित करना जिन्हें हम चाहते हैं न कि उन पर जिनका हमें भय है।

कंजूस

कंजूस व्यक्ति के पास धन होने पर भी वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए उसका उपयोग नहीं करता, कंजूस व्यक्तियों का एक पक्का उसूल होता है कि चमड़ी जाए पर दमड़ी ना जाए। ऐसा ही एक कंजूस आदमी था दगडू। एक दिन दगडू को आम खाने की लालसा जागी। वह आम खरीदने के लिए बाजार की ओर पैदल ही चल पड़ा। राह में उसे एक आम बेचने वाला मिला दगडू ने आम वाले से आम का दाम पूछा, आम वाला बोला आम सौ रूपए किलो है। आश्चर्य चकित दगडू बोला सौ रूपए किलो, सौ रूपए किलो तो बहुत मंहगा है। ऐसा कहते हुए वह आगे बढ़ गया। आगे चलकर उसे पचास रूपए किलो आम बेचने वाला मिला, दगडू को पचास रूपए किलो आम भी मंहगे लगे। वह आगे बढ़ जाता है। आगे बढ़ते हुए उसे दस रूपए किलो आम बेचने वाला मिलता है। परंतु वह दस रूपए भी खर्च नहीं करना चाहता और आगे बढ़ जाता है। कंजूस दगडू का मन लालची हो जाता है वह सोचता है कि आगे बढ़ने पर जरूर सस्ते आम मिल ही जाएंगे। वह ऐसा सोचते हुए आगे बढ़ ही रहा था कि मार्ग में उसे आम का एक पेड़ दिखाई दिया। दगडू ने सोचा कि अब तो मजा

"हमें अधिक लालच नहीं करना चाहिए"

ही आ गया मुझे तो आज मुफ्त में ही आम खाने को मिल जाएंगे। मुफ्त के चक्कर में उसे पेड़ के पीछे खाई भी दिखाई नहीं दी। जैसी ही दगडू आम के पेड़ पर चढ़ा उसका संतुलन बिगड़ गया और वह खाई में गिर गया। इस चक्कर में दगडू की चमड़ी तो गई पर उसने दमड़ी ना जाने दी। इतना लालच भी किस काम का?

अनन्या वर्मा
सुपुत्री श्री राजीव रंजन

वक्त

वक्त बड़ा बलवान है
पलकें झपके शाम है
वक्त कभी ठहरता नहीं
दो पल को सुस्ताता नहीं
वक्त की जिसने कदर करी
वो ही जीवन में सुख पाता है
वक्त का पहिया ना रूका है, ना रूकेगा
बस हर कोई उसके सम्मुख झुकेगा
जो भागे वक्त के आगे वह पछताता है
जो रह जाए पीछे वह भी घबराता है
जो साथ में कदम मिलाता है
वो ही शिखरों को पाता है
वक्त कभी किसी का साथ नहीं निभाता है
जो इसका साथ निभाए, यह उसी का हो जाता है।

पवन कुमार वशिष्ट

लक्ष्य आपको अपने पक्ष में परिवर्तन की दिशा नियंत्रित करने की अनुमति देते हैं।

भारतीय लोक कला : वरली

अपने देश की अनेक जातियों व जनजातियों में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही जो पारंपरिक कलाएं है उनको ही लोककला कहते हैं। कश्मीर से कन्याकुमारी तक इस कला की अमरबेल फैली हुई है। ऐसी ही एक लोक कला है वरली जिसे कहानियों की कला भी कहा जाता है। महाराष्ट्र के ठाणे जिले में वरली जाति के आदिवासियों का निवास है। इसी आदिवासी जाति की कला ही वरली लोक कला के नाम से जानी जाती है। यह जन-जाति महाराष्ट्र के दक्षिण से गुजरात की सीमा तक फैली हुई है। वरली लोक कला कितनी पुरानी है, यह कहना कठिन है। इस कला के माध्यम से कहानियों को चित्रित किया गया है, इससे अनुमान होता है कि इसका प्रारंभ लिखने पढ़ने की कला से भी पहले हो चुका होगा, लेकिन पुरातत्व का विश्वास है कि यह कला दसवीं शताब्दी में लोकप्रिय हुई। इस क्षेत्र पर हिन्दू, मुस्लिम, पुर्तगाली और अँग्रेजी शासकों ने राज्य किया और सभी ने इस कला को प्रोत्साहित किया। सत्रहवें दशक से इसकी लोकप्रियता का नया युग प्रारंभ हुआ जब इनको बाजार में लाया गया।

इस कला की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि इसमें सीधी रेखा कहीं नजर नहीं आती। बिन्दु से बिन्दु ही जोड़ कर रेखा खींची जाती है। इन्हीं के सहारे आदमी, प्राणी और पेड़ पौधों की सारी गतिविधियां प्रदर्शित की जाती है। विवाह, पुरुष, स्त्री, बच्चे, पेड़-पौधों, पशु-पक्षी और खेत आदि विशेष रूप से इन कलाकृतियों के विषय होते हैं। पहले समय में वरली कलाकृतियां विवाह के समय विशेष रूप से बनाई जाती थी। इन्हें शुभ माना जाता था और इसके बिना विवाह को अधूरा समझा जाता था। प्रकृति की प्रेमी यह जन-जाति अपना प्रकृति प्रेम वरली कला में बड़ी गहराई से चित्रित करती है।

त्रिकोण आकृतियों में ढले आदमी और जानवर, रेखाओं में चित्रित हाथ पाँव तथा ज्यामिती की तरह बिन्दु और रेखाओं से बने इन चित्रों को महिलाएं घर में गोबर-मिट्टी से लेपी हुई सतह पर चावल के आटे को पानी मिला कर बनाए गए घोल से बनाती हैं। सामाजिक अवसरों के अतिरिक्त दिवाली, होली के उत्सवों पर भी घर की बाहरी दीवारों पर चौक बनाए जाते है। यह सारे त्योहार खेतों में कटाई के समय ही आते हैं इसलिए इस समय कला में भी ताजे चावल के आटे को इस्तेमाल किया जाता है। रंगने का काम अभी भी पौधों की छोटी-छोटी तीलियों से ही किया जाता हैं। दो चित्रों में अच्छा खासा अंतर होता है। एक-एक चित्र अलग-अलग घटनाएँ दर्शाता है।

वरली जाति में माश नामक व्यक्ति ने इस कला को व्यावहारिक रूप दिया। उसने वरली लोक कला को महाराष्ट्र से बाहर ले जाने की हिम्मत दिखाई और इस कला में अनेक प्रयोग किए। उन्होंने लोक कथाओं के साथ साथ पौराणिक कथाओं को भी वरली शैली में चित्रित किया। वाघदेव, धरती माँ और पांडुराजा के जीवन काल को भी वरली शैली में चित्रित किया। उन्होंने वरली में आधुनिकता का समावेश किया। मिट्टी और गोंद के मिश्रण के साथ साथ अपना काम ज्यादा टिकाऊ बनाने के लिए ब्रुश और औद्योगिक गोंद का प्रयोग किया। इस प्रयोग से वरली कलाकृतियों को नए आयाम मिले और उनकी अंतर्राष्ट्रीय लोकप्रियता बढ़ने के साथ ही वरली जन जाति का आर्थिक स्तर भी सुधरने लगा।

आज माश के अतिरिक्त शिवराम गोजरे और शरत वलघानी जैसे कलाकार इस दिशा में कार्य कर रहे हैं ये लोग कागज और कैनवस पर पोस्टर रंग इस्तेमाल कर रहे हैं। एक-एक क्षण को जीने का आनंद इस पेंटिग में बड़े सुंदर तरीके से दिखायी देता है। देश और काल की सीमाओं का अतिक्रमण करती वरली पेंटिग चिरंतन जीवन को उसके सार्वभौमिक रूप में चित्रित करती है। वरली शैली की पेंटिग जनजातीय कला को मुखरित करती है। कहा जा सकता है कि भारत की कला और संस्कृति लोककलाओं से ही जीवंत है। वरली कलाकृतियों की यात्रा गोबर मिट्टी की सतह वाली दीवार से शुरू हो कर आज की तिथि में कैनवस तक आ पहुंची है।

ब्रिजेन्द्र सिंह बिष्ट

हम जिस किसी भी चीज की विश्वास के साथ उम्मीद करते हैं
वो हमारी स्वत: परिपूर्ण भविष्यवाणी हो जाता है।

कार्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़ा / हिंदी दिवस 2016

दिनांक 01.09.16 को विभागाध्यक्ष महोदय श्री एच.भराली ने दीप प्रज्जवलित कर हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ किया। पखवाड़े के दौरान अधिकारियों / कर्मचारियों के लिए दो वर्गों में (हिंदी भाषी एवं अन्य भाषा-भाषी) हिंदी की चार प्रतियोगिताएं (तात्कालिक भाषण, समाचार वाचन, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन एवं अंताक्षरी) आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में सभी अधिकारियों / कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। 14 सितम्बर, 16 को हिंदी दिवस का मुख्य समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष महोदय ने सबको हिंदी दिवस की बधाई दी। हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी के संदेश एवं विद्युत राज्य मंत्री श्री पीयूष गोयल जी की अपील से सभी को अवगत करवाया गया। उसके बाद वर्ष के दौरान कार्यालय में राजभाषा हिंदी के किए गए कार्यों का सारांश प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अंत में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिता के विजेताओं एवं वर्ष के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं के साथ ही कार्यालय में लागू की गई नकद पुरस्कार प्रोत्साहन योजना के विजेताओं को विभागाध्यक्ष महोदय ने पुरस्कार प्रदान किया। साथ ही साथ सभी ने जलपान का भी आनंद लिया। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष महोदय के कर-कमलों द्वारा हिंदी की वार्षिक पत्रिका 'रतनदीप' के तृतीय अंक का विमोचन किया गया। समारोह की संचालिका सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहा. हिंदी अधिकारी ने समारोह के अंत में धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

रत्नदीप

ऑफिस कर्मचारियों के लिए कुछ सूक्ष्म एक्सरसाइज

ऑफिस में 8 से 10 घंटे तक काम करने के बाद हम सभी के पास अपनी फिटनेस के लिए समय नहीं बच पाता, ऐसे में हम अपने स्वास्थ्य का ख्याल रख पाने में असक्षम रहते हैं। लंबे समय तक ऑफिस में काम करने से मन और शरीर दोनों पर प्रभाव पड़ता है। लगातार बैठे रहने से गर्दन, कंधों और रीढ़ की हड्डी में अकड़न और दर्द शुरू हो जाता है। इसके साथ ही दृष्टि दोष, सिरदर्द, श्वास संबंधी रोग, कब्ज और अनावश्यक डर आदि की समस्याएं भी शुरू होने लगती है। उक्त सभी समस्याओं के कारण हमारी कार्यक्षमता और व्यवहार में गिरावट आने लगती है।

यदि हम अपने कार्यस्थल पर काम के दौरान थोड़ा सा समय निकाल सकें तो कुछ मामूली सूक्ष्म व्यायाम करने से इन स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से काफी हद तक बचा जा सकता है। ऑफिस में सर्वप्रथम हमें आरामपूर्ण व सहज बैठने या खड़े रहने की आदत डालनी चाहिए। क्यूंकि हड्डियों से जुड़ी सभी समस्याओं की जड़ यहीं छुपी होती हैं। यहां मैं आपको शरीर के अंगो से जुड़ी कुछ एक्सरसाइज बताने जा रहा हूं, जिन्हें आप थोड़ा हिल-डुल कर या अपनी सीट पर बैठे-बैठे भी कर सकते हैं।

आंखों और चेहरे के लिए एक्सरसाइज:-

- कुछ सेकंड के लिए हथेलियों से अपनी दोनों आंखों को ढक दें। फिर मुंह में हवा भरें और गालों को फुलाते हुए भरी हुई हवा को बॉल की तरह मुंह में कुछ सेकंड तक दाएं-बाएं घुमाएं। उसके बाद हवा को धीरे-धीरे मुंह से बाहर निकाल दें, फिर मुंह को बड़े आकार में 5 बार खोलें और बंद करें। ऐसा 2 से 4 बार करें।
- आंखों की पुतलियों को दाएं-बाएं, ऊपर-नीचे और फिर गोल-गोल घुमाएं। कुछ सेकंड के लिए पहले छत पर देखें, फिर फर्श पर और उसके बाद दूर दीवार पर देखें। ऐसा करने के बाद कम से कम 30 सेकंड के लिए आंखें बंद कर लें। फिर इसी प्रक्रिया को दोहराएं, ऐसा कम से कम 5 बार करें तो आंखें रिफ्रेश हो जाती है।

रीढ़ की हड्डी के लिए एक्सरसाइज:-

- रीढ़ की बीमारी से बचने के लिए पहले सीधे खड़े हो जाएं, हाथ नीचे की ओर स्वाभाविक स्थिति में रखें। इस स्थिति में हाथ कोहनी से मोड़े बगैर खिंचते हुए पीछे की ओर ले जाएं। इसी के साथ गर्दन ऊपर उठाकर गहरी श्वास लें और श्वास को छोड़ें। ऐसा 2 से 4 बार करें।
- अपने दाएं हाथ की अंगुलियों से दाएं कंधे और बाएं हाथ की अंगुलियों से बाएं कंधे को पकड़े फिर गहरी सांस लें। सांस को नॉर्मल रखते हुए रीढ़ की हड्डी को कमर से घुमाएं, पहले दाईं ओर फिर बाईं ओर। ऐसा 2 से 4 बार करें।

कंधों के लिए एक्सरसाइज:-

- अंगुलियों के पोरों को एक-दूसरे से मिलाते हुए दाएं हाथ की अंगुलियों को दाएं और बाएं हाथ की अंगुलियों को बाएं कंधे पर रखें। फिर कोहनियों को क्लॉक वाइज और एंटी क्लॉक वाइज घुमाइए। ऐसा 2 से 4 बार करें।
- दाएं हाथ से बाएं और बाएं हाथ से दाएं कंधे को पकड़कर उसे दबाएं। उसके बाद एक हाथ से दूसरे हाथ की कलाई पकड़कर ऊपर उठाते हुए सीधा सिर के ऊपर ले जाएं। श्वास अंदर भरते हुए दाहिनी ओर झुकें, गर्दन व सिर स्थिर रखें। फिर श्वास छोड़ते हुए हाथों को सिर के ऊपर ले जाएं। इसी प्रकार दूसरी ओर से भी इसी क्रिया को करें। ऐसा 2 से 4 बार करें।

हर चीज करने में संचालन का गोल्डन रुल एक प्रैक्टिस करिए,
औरों को ऐसे संचालित करिए जैसा आप खुद संचालित होना चाहेंगे।

गर्दन के लिए एक्सरसाइज :-

- पैरों की जंघा पर अपनी हथेली रख दें। अब अपनी गर्दन को पीछे की ओर ले जाएं। अब गर्दन को दाईं ओर जितना हो सके घुमाएं और उसके बाद बाईं ओर घुमाएं। अब सिर को बीच में रखते हुए आगे की ओर झुका दें। इस दौरान आपकी ठुड्डी आपकी छाती

को छू लेगी, ठीक इसी वक्त गहरी सांस लें और छोड़ें। ऐसा 2 से 4 बार करें।

- गर्दन को आराम से दाएं घुमाकर कुछ देर तक दाएं ही रखें, फिर इसी तरह धीरे-धीरे बाएं घुमाएं। उसके बाद ऊपर और नीचे घुमाएं। 15 सेकंड तक ऊपर और 15 सेकंड तक नीचे रखें। फिर दाएं से बाएं गोल-गोल घुमाएं, फिर बाएं से दाएं गोल-गोल घुमाएं। ऐसा 2 से 4 बार करें।

पंजों के लिए एक्सरसाइज :-

- कुर्सी पर सीधे होकर इस प्रकार बैठें कि आपके घुटने अंदर की ओर से कुर्सी की सीट के किनारे पर लगे। अब पैरों को आगे खीचतें हुए पंजों को अप एंड डाउन करें।

- उक्त प्रकार से कुर्सी पर बैठे हुए पैरों को घुटनों से आगे की ओर सीधा करके दोनों पंजों को क्लॉक वाइज और एंटी क्लॉक वाइज घुमाएं। यह अभ्यास सायटिका पेन तथा घुटनों के लिए उपयोगी है। इस अभ्यास को 2 से 4 बार करें।

छाती के लिए एक्सरसाइज :-

- दोनों हाथों की अंगुलियों को एक-दूसरे में फंसाकर हाथों की हथेलियों को सिर के ऊपर उल्टा कर दें और हाथों को ऊपर खींचें। इस दौरान फेफड़ों में अच्छे से हवा भरें और धीरे-धीरे छोड़ दें। इसी अवस्था में थोड़ा दाहिने और थोड़ा बाएं झुकें। इस दौरान फिंगर लॉक पोजिशन में अपने हाथ सिर के ऊपर की ओर ही रखें।

अंगुलियों और कलाई के लिए एक्सरसाइज :-

- दोनों हाथों को सामने फैलाकर हथेलियों को भूमि की ओर रखें। फिर अंगुलियों को बलपूर्वक धीरे-धीरे मोड़ें और सीधा करें अर्थात् मुट्ठी बंद करें और खोलें। इस अभ्यास को 2-4 बार करें।
- अंगूठे को मोड़कर अंगुलियों से दबाते हुए दोनों हाथों की मुट्ठियां बंद करके सामने कंधे के समानांतर सीधा रखें तथा मुट्ठियों को क्लॉक वाइज और एंटी क्लॉक वाइज घुमाएं। इस दौरान कोहनियां सीधी रहनी चाहिए। इस अभ्यास को 2-4 बार करें।
- दोनों हाथों को सामने फैलाकर हाथों के अंगूठे को बारी-बारी से सभी अंगुलियों से स्पर्श कराएं जैसे हम अंगुलियों पर गिनती गिनते हैं फिर प्रत्येक अंगुलियों के पृष्ठ भाग के नाखून को अंगूठे से दबाएं। इस एक्सरसाइज में प्रत्येक अंगुली से शून्य की आकृति बनेगी। ऐसा 8 से 10 बार करें।

इन एक्सरसाइज के साथ-साथ कुछ महत्वपूर्ण बातों का भी ध्यान रखना चाहिए

जैसे कि :-

- ऑफिस में एलिवेटर या लिफ्ट का सहारा लेने की बजाय सीढ़ियों का इस्तेमाल करें।
- काफी लंबे समय तक एक जगह खड़े या बैठे नहीं रहना चाहिए, थोड़े-थोड़े अंतराल के बाद टहल लेना काफी लाभदायक साबित होता है।
- लम्बे समय तक खाली पेट न रहें। ज्यादा चाय-कॉफी पीने से बचें। थोड़ी-थोड़ी देर बाद पानी पीते रहना चाहिए।
- काम करते वक्त बॉडी पोश्चर का ध्यान रखें।

राजकुमार

आपकी सबसे बड़ी पूंजी आपके कमाने की क्षमता है।
आपका सबसे बड़ा संसाधन आपका समय है।

हिंदी प्रतियोगिता

कार्यालय में दिनांक 27.05.16 को हिंदी निबंध प्रतियोगता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता हिंदी भाषी एवं अन्य भाषा-भाषी कार्मिकों के लिए दो वर्गों में आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता के परिणाम निम्नवत हैं:-

वर्ग	नाम एवं पदनाम	पुरस्कार	राशि
हिंदी भाषी	श्रीमती सरिता ठुकराल, सहायक-I (एसजी)	प्रथम	रूपए 500/-
	श्री सुभाष चंद शर्मा, अभियांत्रिकी पर्यवेक्षक	द्वितीय	रूपए 450/-
	श्री संजीव कुमार, सहायक-III (कम्प्यूटर)	तृतीय	रूपए 400/-
अन्य भाषा-भाषी	श्रीमती वांगमु रीजीजू, कनि. अभियंता (ई/एम)	प्रथम	रूपए 1000/-
	श्री जयंत गुप्ता चौधुरी, सहा. लेखा अधिकारी	द्वितीय	रूपए 900/-
	श्रीमती विभा मेधी, वरि. अनुरेखक	द्वितीय	रूपए 900/-
	श्रीमती गीता जय कुमार, निजी सचिव-I	तृतीय	रूपए 800/-
	श्री जॉन डेनियल, निजी सचिव-I	तृतीय	रूपए 800/-

दिनांक 01.11.15 से 15.11.15 तक की अवधि के दौरान हिंदी टिप्पण पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के दौरान हिंदी भाषी एवं अन्य भाषा-भाषी कार्मिकों के लिए दो वर्गों में हिंदी में टिप्पणी लिखने की प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता के परिणाम निम्नवत हैं :-

वर्ग	नाम एवं पदनाम	पुरस्कार	राशि
हिंदी भाषी	श्री जयमल पॉल, सहा. प्रबंधक (संपर्क)	प्रथम	रूपए 500/-
	श्री सुभाष चंद शर्मा, अभियांत्रिकी पर्यवेक्षक	द्वितीय	रूपए 450/-
	श्री राजीव रंजन, प्रबंधक (आई.टी.)	तृतीय	रूपए 400/-
अन्य भाषा- भाषी	श्री नव कमल बोरा, प्रबंधक (सी)	प्रथम	रूपए 1000/-
	श्रीमती एलिजाबेथ पिरबट, प्रबंधक (ई)	द्वितीय	रूपए 900/-
	श्री जॉन डेनियल, निजी सचिव	तृतीय	रूपए 800/-

जीतने वाले कभी हार नहीं मानते और हार मानने वाले कभी जीतते नहीं।

दिनांक 27.03.17 को हिंदी भाषी और अन्य भाषा-भाषी कार्मिकों के लिए दो वर्गों में हिंदी वर्तनी शोधन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता के अंतर्गत प्रतिभागियों को वस्तुपरक प्रश्न-पत्र दिया गया था, जिसमें हिंदी के 40 (चालीस) शब्द थे, प्रत्येक शब्द का एक शुद्ध तथा एक अशुद्ध रूप था। प्रतिभागियों को शब्द के शुद्ध रूप पर सही का निशान लगाना था। प्रतियोगिता में कुल 16 (सोलह) प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के परिणाम निम्नवत हैं :-

वर्ग	नाम एवं पदनाम	पुरस्कार	राशि
हिंदी भाषी	श्री सुभाष चंद शर्मा, अभियांत्रिकी पर्यवेक्षक	प्रथम	रूपए 500/-
	श्री मधुकर जोशी, आशुलिपिक	द्वितीय	रूपए 450/-
	श्री संजीव कुमार, सहायक-।।। (कम्प्यूटर)	तृतीय	रूपए 400/-
अन्य भाषा-भाषी	श्री जयंत गुप्ता चौधुरी, सहा. लेखा अधिकारी	प्रथम	रूपए 1000/-
	श्री नव कमल बोरा, प्रबंधक (सी)	द्वितीय	रूपए 900/-
	श्रीमती एलिजाबेथ पिरबट, प्रबंधक (ई)	तृतीय	रूपए 800/-
	श्री रूपक कुमार चंद्रा, सहायक-।।।	तृतीय	रूपए 800/-

एहसास के साथ आप जो कुछ भी यकीन करते हैं वही आपकी वास्तविकता बन जाती है।

ज्वालादेवी

हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा से 30 किलो मीटर दूर स्थित है ज्वालादेवी। ज्वाला मंदिर को ज्योता वाली का मंदिर और नगरकोट भी कहा जाता है। ज्वाला मंदिर को खोजने का श्रेय पांडवो को जाता है। इसकी गिनती माता के प्रमुख शक्ति पीठों में होती है। मान्यता है कि यहाँ देवी सती की जीभ गिरी थी। यह मंदिर माता के अन्य मंदिरों की तुलना में अनोखा है क्योंकि यहाँ पर किसी मूर्ति की पूजा नहीं होती है बल्कि पृथ्वी के गर्भ से निकल रही नौ ज्वालाओं की पूजा होती है।

ज्वालादेवी मंदिर में सदियों से बिना तेल बाती के प्राकृतिक रूप से नौ ज्वालाएं जल रही हैं। नौ ज्वालाओं में प्रमुख ज्वाला जो चांदी के जाला के बीच स्थित है उसे महाकाली कहते हैं। अन्य आठ ज्वालाओं के रूप में मां अन्नपूर्णा, चण्डी, हिंगलाज, विंध्यवासिनी, महालक्ष्मी, सरस्वती, अम्बिका एवं अंजी देवी ज्वाला देवी मंदिर में निवास करती हैं। इस मंदिर का प्राथमिक निर्माण राजा भूमि चंद ने करवाया था। बाद में महाराजा रणजीत सिंह और राजा संसारचंद ने 1835 में इस मंदिर का पूर्ण निर्माण कराया।

इस जगह के बारे में एक कथा अकबर और माता के परम भक्त ध्यानू भगत से जुड़ी है। जिन दिनों भारत में मुगल सम्राट अकबर का शासन था, उन्हीं दिनों की यह घटना है। हिमाचल के नादौन ग्राम निवासी माता का एक सेवक ध्यानू भक्त एक हजार यात्रियों सहित माता के दर्शन के लिए जा रहा था। इतना बड़ा दल देखकर बादशाह के सिपाहियों ने चांदनी चौक दिल्ली में उन्हें रोक लिया और अकबर के दरबार में ले जाकर ध्यानू भक्त को पेश किया। बादशाह ने पूछा तुम इतने आदमियों को साथ लेकर कहां जा रहे हो। ध्यानू ने हाथ जोड़ कर उत्तर दिया मैं ज्वालामाई के दर्शन के लिए जा रहा हूं मेरे साथ जो लोग हैं, वह भी माता जी के भक्त हैं और यात्रा पर जा रहे हैं। अकबर ने सुनकर कहा यह ज्वालामाई कौन है? और वहां जाने से क्या होगा? ध्यानू भक्त ने उत्तर दिया महाराज ज्वालामाई संसार का पालन करने वाली माता है। वे भक्तों के सच्चे हृदय से की गई प्राथनाएं स्वीकार करती हैं। उनका प्रताप

ऐसा है कि उनके स्थान पर बिना तेल बत्ती के ज्योति जलती रहती है, हम लोग प्रतिवर्ष उनके दर्शन को जाते हैं।

अकबर ने कहा अगर तुम्हारी बंदगी पाक है तो देवी माता तुम जैसे भक्तों का ख्याल न रखे तो फिर तुम्हारी इबादत का क्या फायदा? या तो वह देवी ही यकीन के काबिल नहीं या फिर तुम्हारी इबादत झूठी है। इम्तहान के लिए हम तुम्हारे घोड़े की गर्दन अलग कर देते है, तुम अपनी देवी से कहकर उसे दोबारा जिंदा करवा लेना। इस प्रकार घोड़े की गर्दन काट दी गई। ध्यानू भक्त ने कोई उपाए न देखकर बादशाह से एक माह की अवधि तक घोड़े के सिर व धड़ को सुरक्षित रखने की प्रार्थना की। अकबर ने ध्यानू भक्त की बात मान ली और उसे यात्रा करने की अनुमति भी दे दी। बादशाह से विदाई लेकर ध्यानू भक्त अपने साथियों सहित माता के दरबार में उपस्थित हुआ। स्नान पूजा करने के बाद रात भर जागरण किया। प्रात: समय में हाथ जोड़ कर ध्यानू ने प्रार्थना की कि मातेश्वरी आप अंतर्यामी हैं। बादशाह मेरी भक्ति की परीक्षा ले रहा है, मेरी लाज रखना, मेरे घोड़े को अपनी कृपा व शक्ति से जीवित कर देना। कहते है की अपने भक्त की लाज रखते हुए माँ ने घोड़े को फिर से जिंदा कर दिया। यह सब कुछ देखकर बादशाह अकबर हैरान हो गया। उसने अपनी सेना बुलाई और खुद मंदिर की तरफ चल पड़ा। वहाँ पहुँच कर फिर उसके मन में शंका हुई। उसने अपनी सेना से पूरे मंदिर में पानी डलवाया, लेकिन माता की ज्वाला बुझी नहीं। तब जाकर उसे माँ की महिमा का यकीन हुआ और उसने सवा मन (पचास किलो) सोने का छत्तर चढ़ाया। लेकिन माता ने वह छत्तर कबूल नहीं किया और वह छत्तर गिर कर किसी अन्य पदार्थ में परिवर्तित हो गया। आप आज भी वह बादशाह अकबर का छत्तर ज्वाला देवी के मंदिर में देख सकते हैं।

मंदिर का मुख्य द्वार काफी सुंदर एवं भव्य है। मंदिर में प्रवेश के साथ ही बांये हाथ पर अकबर नहर है। इस नहर को अकबर ने बनवाया था। उसने मंदिर में प्रज्ज्वलित ज्योतियों को बुझाने के लिए यह नहर बनवाई थी। उसके आगे मंदिर का गर्भ द्वार है जिसके अंदर माता ज्योति के रूप में विराजमान है। थोड़ा ऊपर की ओर जाने पर गोरखनाथ का मंदिर है जिसे गोरख डिब्बी के नाम से जाना जाता है। कहते है कि यहाँ गुरु गोरखनाथ जी पधारे थे और कई चमत्कार दिखाए थे। यहाँ पर आज भी एक पानी का कुण्ड है जो देखने में खौलता हुआ लगता है पर वास्तव में पानी ठंडा है। ज्वालाजी में नवरात्रि के समय में विशाल मेले का आयोजन किया जाता है। साल के दोनों नवरात्रि यहां पर बड़े धूमधाम से मनाई जाती है। नवरात्रि में यहां पर आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या दोगुनी हो जाती है। इन दिनों में यहां पर विशेष पूजा अर्चना की जाती है। अखंड देवी पाठ रखे जाते हैं और वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हवन इत्यादि की जाती है। नवरात्रि में पूरे भारत वर्ष से श्रद्धालु यहां पर आकर देवी की कृपा प्राप्त करते है। कुछ लोग देवी के लिए लाल रंग के ध्वज भी लाते हैं।

मंदिर में आरती के समय अद्‌भुत नजारा होता है। मंदिर में पांच बार आरती होती है। एक मंदिर के कपाट खुलते ही सूर्योदय के समय में की जाती है। दूसरी दोपहर को की जाती है, आरती के साथ-साथ माता को भोग भी लगाया जाता है। फिर संध्या आरती होती है। इसके पश्चात् रात्रि आरती होती है। इसके बाद देवी की शयन शय्या को तैयार किया जाता है। उसे फूलों और सुगंधित सामग्रियों से सजाया जाता है। इसके पश्चात् देवी की शयन आरती की जाती है जिसमें भारी संख्या में आये श्रद्धालु भाग लेते हैं। ज्वालाजी में रहने के लिए काफी संख्या में धर्मशालाएं व होटल हैं जिनमें रहने व खाने का उचित प्रबंध है। जो कि उचित मूल्यों पर उपलब्ध है। ज्वालामुखी मंदिर के पास का नजदीकी शहर पालमपुर व कांगडा है जहां पर काफी सारे डीलक्स होटल हैं। यात्री यहां पर भी ठहर सकते है यहां से मंदिर तक जाने के लिए बस व कार सुविधा उपलब्ध है। यहां पहुंचना बेहद आसान है। यह स्थान वायु, सड़क और रेल मार्ग से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

संजीव कुमार

जब तक संभव है तब तक स्वयं आत्मनिर्भर रहिये।

असम का काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान

विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक संपदा से भरपूर पूर्वोत्तर भारत के हरे भरे आंचल में बसे असम राज्य का सौंदर्य देखते ही बनता है। चारों ओर हरियाली, चाय के बेशुमार बागान, घने जंगल और तरह-तरह के बांसों के झुरमुट राज्य की सुंदरता में रंग भरते प्रतीत होते हैं। प्रांत के बीचों बीच बहती विशाल ब्रहमपुत्र नदी यहां अपने आप में पर्यटकों के लिए एक विशेष आकर्षण का केंद्र है। असम में ऐसी कई सांस्कृतिक धरोहरें हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। यहां एक ओर द्वीप माझुली है तो दूसरी और वन्य प्राणियों के विश्वप्रसिद्ध अभ्यारण्य में मुख्य काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और मानस टाइगर रिजर्व है। राज्य के सुआलकुची नामक स्थान में बने दो प्रकार के विशेष रेशमी कपड़े मुगा व पाट तथा चाय और बांस से बनी वस्तुएं यहां आने वाले पर्यटक जरूर ले जाते हैं जो देश और विदेशों के कोने-कोने में पहुंचती हैं।

असम में ब्रहमपुत्र के बीच मयूरद्वीप में प्राचीन शिव मन्दिर उमान्नद है। भस्मास्वल पर्वत पर स्थित इस स्थान का संबंध भगवान शिव द्वारा कामदेव को भस्म किए जाने से है। हरियाली के कारण हरा स्वर्ग कहलाने वाले इस राज्य में बहते ब्रहमपुत्र नदी का दूसरा छोर देखने के लिए आंखें खुली ही नहीं, बल्कि फटी की फटी रह जाती हैं। इस पर बने पुल से जब रेलगाड़ी गुजरती है तो यात्रियों को बार-बार ऐसा लगता है जैसे यह पुल पता नहीं कब खत्म होगा। ब्रहमपुत्र के मध्य में द्वीप माझुली है, जिसे सजाने के लिए प्रकृति ने अपनी तमाम कलाएं इसमें उड़ेल दी हैं। कई तरह के विदेशी पक्षी प्रतिवर्ष आकर इस द्वीप पर बसेरा डालते हैं। भूमि कटाव व अन्य प्राकृतिक कारणों से माझुली का क्षेत्रफल घटकर अब 880 वर्ग किलोमीटर रह गया है। यहां से सुंदर हिमालय व अन्य पहाड़ियों का मनोहरी दृश्य साफ दिखता है। आत्मिक शांति और आध्यात्मिक चिंतन के लिए श्रेष्ठ माने जाने वाले इस द्वीप पर ही पंद्रहवी शताब्दी में वैष्णव संत शंकर देव जी और उनके शिष्य माधवदेव जी का मेल हुआ था।

असम का मुख्य शहर गुवाहाटी पूर्वोत्तर राज्यों में जाने का मुख्य द्वार है और इसकी राजधानी दिसपुर गुवाहाटी का ही एक हिस्सा है। हवाई, रेल और सड़क इन तीनों रास्तों से असम देश के प्रत्येक बड़े शहर से जुड़ा है। नई दिल्ली, मुंबई, कोलकता और चेन्नई से गुवाहटी के लिए इंडियन एयरलाइंस, एयर सहारा और जेट एयरवेज की नियमित हवाई सेवाएं उपलब्ध हैं। यहां से जोरहाट, डिब्रुगढ़, तेजपुर, उत्तरी लखीमपुर व सिलचर के लिए भी हवाई सेवाएं उपलब्ध हैं। गुवाहटी में लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलोई अंतरराष्ट्रीय

विश्व की सर्वोत्तम और सुंदरतम चीजें न देखी जा सकती हैं और न ही छुई जा सकती हैं,
वे तो केवल दिल से महसूस की जा सकती हैं।

हवाई अड्डे से एयर इंडिया कंपनी बैंकाक तथा बैंकाक होते हुए अन्य देशों के लिए अपनी उड़ान सेवाएं उपलब्ध करवाती है। रेल के जरिए कोलकता, दिल्ली, मुंबई, चैन्नई, बंगलौर, और तिरुवनंतपुरम से असम के विभिन्न स्थानों तक पहुंचा जा सकता है। सुविख्यात शक्तिपीठ मां कामाख्या मंदिर गुवाहटी रेलवे स्टेशन से आठ किलोमीटर दूर नीलांचल पहाड़ पर स्थित है।

संसार के पर्यटन मानचित्र पर काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान का नाम प्रमुख रुप से अंकित है, जो विशालकाय एक सींग वाले गैंडे के लिए प्रसिद्ध है। काजीरंगा और यहां का गैंडा बहुत उपयुक्त समय पर संरक्षण में ले लिए गए थे। यदि ऐसा न होता तो शायद इस प्रकृति धरोहर को आज हम नहीं देख पाते। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के वाइसराय लॉर्ड कर्जन की पत्नी ने चाय बागान की बात सुनी तो उन्हें चाय बागान को देखने की इच्छा हुई। सन् 1904 में वह स्वयं चाय बागान और एक सींग वाले गैंडे को देखने असम और काजीरंगा गई। उस समय उन्हें काजीरंगा में गैंडा तो कहीं नही दिखा पर उन्होंने उसके भारी भरकम पांवों के निशान देखे। इस आधार पर उन्होंने माना की ऐसा जानवर काजीरंगा में है। यह जानवर कहीं लुप्त न हो जाए इस दृष्टि से लेडी कर्जन ने अपने पति को मनाया और वायसराय का हुक्म जारी किया गया कि काजीरंगा में शिकार न किया जाए तथा इसे सुरक्षित क्षेत्र घोषित कर दिया गया। सन् 1913 में काजीरंगा सुरक्षित वन को गेम सैन्चुअरी का दर्जा दिया गया। गैंडे के अतिरिक्त सभी जानवरों की खाल व अन्य अंगों के गैरकानूनी व्यापार को बंद करवा दिया गया तथा जंगल को पर्यटकों के लिए खोल दिया गया। सन् 1974 में काजीरंगा को राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा मिला।

इस अभयारण्य को हाथी पर सवार हो कर देखा जा सकता है साथ ही यहां के लिए जीप सफारी भी उपलब्ध होती हैं जिन्हें विभिन्न लॉजों द्वारा बुक करवाया जाता है। यहां के जंगलों में हाथी पर जाना बेहतर होता है। गैंडा हाथी को पहचान कर भागता नहीं है। कैमरा लिए हुए व्यक्ति को यहां भरपूर मौका मिलता है और वह गैंडे को आसानी से कैमरे में कैद कर सकता है। इस राष्ट्रीय उद्यान का प्राकृतिक परिवेश वनों से युक्त है, एक सींग वाले गैंडे के अलावा यहाँ पर बड़ी एलिफेंट ग्रास, मोटे वृक्ष, दलदली स्थान और उथले तालाब हैं। हाथी, भारतीय भैंसा, हिरण, सांभर, भालू, बाघ, चीते, सुअर, बिल्ली, जंगली बिल्ली, हॉग बैजर, लंगूर, हुलॉक गिब्बन, भेडिया, साही, अजगर और अनेक प्रकार की चिड़ियाँ, जैसे – 'पेलीकन', बत्तख, कलहंस, हॉर्नबिल, आइबिस, जलकाक, अगरेट, बगुला, काली गर्दन वाले स्टॉर्क, लेसर एडजुलेंट, रिंगटेल फिशिंग ईगल आदि यहां बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। यहां विभिन्न प्रजातियों के बाज, चीलें और तोते भी पाए जाते हैं। गुवाहटी से लगभग 225 किलोमीटर तथा जोरहाट हवाई अड्डे से 97 किलोमीटर की दूरी पर स्थित काजीरंगा तक गुवाहटी से बस, जीप या अपनी कार से भी पहुंचा जा सकता है। यहां पर्यटन के लिए सब से उपयुक्त समय नवंबर से अप्रैल तक का माना जाता है। पर्यटकों के रहने के लिए यहां वन विश्राम गृह, होटल आदि उपलब्ध हैं। काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान यूनेस्को की विश्व धरोहर की सूची में शामिल है।

विभा मेधी

आप ये निश्चय करने से पहले कि क्या संभव है निश्चय करिए कि क्या सही है।

मियां शेख चिल्ली का किस्सा

एक बार अंधेरी रात में मियां शेख चिल्ली अपने घर की ओर चले जा रहे थे। तभी अचानक उनके पास से चार चोर गुजरे। चुप-चाप दबे पाँव आगे बढ़ रहे चोरों के पास जा कर मियां शेख चिल्ली ने उनसे पूछा कि आप सब इस वक्त कहाँ जा रहे हैं। चोरों ने सोचा कि मियां शेख चिल्ली भी उन्हीं की तरह कोई चोर हैं और साफ-साफ बता दिया कि हम चोर हैं और चोरी करने जा रहे हैं।

मियां शेख चिल्ली को ख्याल आया कि इन लोगों के साथ चला जाता हूँ कुछ नया सीखने को मिलेगा। यही सोच कर उन्होंने चोरों को कहा कि मुझे भी अपने साथ ले चलो। पहले तो चोरों ने मियां शेख चिल्ली को मना कर दिया पर बार-बार मिन्नतें करने पर उन्होंने उन्हें भी अपने साथ ले लिया। चोरों ने एक रिहाइशी इलाके में बने आलीशान मकान में चोरी करने का फैसला किया, जिसमें एक अकेली बुढ़िया रहती थी और फिर चारों घर के अंदर घुस गए और उनके पीछे-पीछे मियां शेख चिल्ली भी हो लिए।

चोरों नें उन्हें हिदायत दी कि जैसा हम कहें वैसा ही करना और हमेशा छुपे रहना। घर के अंदर आते ही चारों चोर पैसों गहनों और अन्य कीमती चीजों की खोज में लग गए। मियां शेख चिल्ली की यह पहली चोरी थी और वो काफी उत्साहित थे। उन्होंने सोचा कि चलो मैं भी घर में कुछ कीमती सामान ढूंढता हूँ और चोरों का हाथ बटाता हूँ।

खोज करते-करते मियां शेख चिल्ली घर के रसोईघर में जा पहुंचे। वहाँ से खीर पकने की खुशबू आ रही थी। मियां शेख चिल्ली के मुंह में पानी आ गया, चोरी करने का ख्याल अब उनके दिमाग से पूरी तरह से जा चुका था। अब उन्हें किसी भी कीमत पर वह पक रही खीर खानी थी।

मियां शेख चिल्ली दबे पाँव चूल्हे के पास पहुंचे तो उन्होंने देखा कि वहीं पास ही में एक बुढ़िया कुर्सी पर बैठी थी, जो शायद खीर पकाते-पकाते सो गयी थी। खीर के ख्यालों में खोये मियां शेख चिल्ली भूल ही गए कि वो एक चोर हैं, उन्होंने फटा-फट एक प्लेट में खीर निकाली और मजे से खाने लगे। वो खा ही रहे थे कि तभी अचानक कुर्सी पर सो रही बुढ़िया का हाथ सीधा हो कर कुर्सी से बाहर की ओर लहरा गया।

मियां शेख चिल्ली को लगा कि बेचारी बुढ़िया भूखी होगी, इसीलिए हाथ बढ़ा कर कर खीर मांग रही है। इसी नेक सोच के साथ उन्होंने पतीले से एक प्याला खीर भर कर बुढ़िया के हाथ में रख दिया। गर्म खीर के प्याले की तपन से सो रही बुढ़िया तिलमिला उठी और चोर-चोर चिल्लाने लगी। चिल्लम-चिल्ली होने पर आस-पड़ोस के लोग जमा हो गए।

मियां शेख चिल्ली और चोर बाहर नहीं भाग सकते थे इसलिए घर में ही इधर उधर छुप गए। जल्द ही एक चोर पकड़ा गया। लोग उसे मार-मार कर सवाल-जवाब करने लगे,

तू यहाँ क्यों आया था?

ऊपर वाला जाने।

तूने क्या-क्या चुराया?

ऊपर वाला जाने।

इस तरह लोग कुछ भी पूछते चोर यही कहता कि ऊपर वाला यानि अल्लाह जाने। लोगों ने सोचा कि चलो इसे जाने देते हैं, भले ही यह चोर है, लेकिन हर बात में अल्लाह को तो याद करता है। लेकिन तभी धड़ाम से आवाज आई मियां शेख चिल्ली जो ठीक ऊपर दुछत्ती में छुपे थे नीचे कूद पड़े और चोर को थप्पड़ जड़ते हुए बोले। सारा कर्म तुमने और तुम्हारे तीन साथियों ने किया, लेकिन हर बात में तू मेरा नाम लगा दे रहा है, ऊपर वाला जाने, ऊपर वाला जाने, भाइयों मैं कुछ नहीं जानता मैं तो बस ऐसे ही इनके साथ हो लिया था। फिर क्या था, लोगों ने बाकी तीनों चोरों को भी खोजा और उनकी धुनाई करने लगे और मौके का फायदा उठाते हुए मियां शेख चिल्ली पतली गली से निकल लिए।

कुनाल चंद्रा
सुपुत्र श्री रूपक कुमार चंद्रा

लक्ष्य का पीछा करिए, पैसे का नहीं, पैसा खुद आपके पीछे आने लगेगा।

शब्दों के फुल फॉर्म

आज कल शॉर्टकट का जमाना है।

wi-fi, gsm, cdma, gif, ok, pnr

जैसे शब्दों से हम सभी परिचित है और इन शब्दों का प्रयोग हम अपने दिन प्रतिदिन के कार्यों में भी करते है। आप सभी की जानकारी के लिए मैं एसे ही कुछ शब्दों के फुल फॉर्म आपके लिए प्रस्तुत कर रहा हूं :-

जीएसएम
(ग्लोबल सिस्टम फॉर मोबाइल कम्यूनिकेशन)
GSM
(Globle system for mobile communication)

सीडीएमए
(कोड डिविजन मल्टिपल ऐक्सेस)
CDMA
(code division multiple access)

आईएफएससी
(इंडियन फाइनैंशल सिस्टम कोड)
IFSC
(Indian financial system code)

वाईफाई
(वायरलेस फिडलिटी)
Wi-Fi
(wireless fidelity)

पीएनआर
पैसेंजर नेम रिकॉर्ड
PNR
(Passenger name record)

पीडीएफ
(पोर्टबल डॉक्युमेंट फॉमेंट)
PDF
(Portable document format)

नव कमल बोरा

इतना अच्छा बनो कि कोई तुम्हें नजरअंदाज ना कर सकें।

डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस

टेक्नॉलजी तेजी से बदल रही है। अभी हम 4जी इंटरनेट का इस्तेमाल कर रहे हैं मगर जल्द ही 5जी के जरिए सुपरफास्ट इंटरनेट का इस्तेमाल किया जा सकेगा। अभी इस टेक्नॉलजी को जमीन पर उतारने की कोशिश जारी है, मगर इसका इतिहास 100 साल से भी अधिक पुराना है। खास बात यह है कि इसका संबंध भारत से भी है। डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस के योगदान से ही दुनिया जल्द ही 5जी इंटरनेट का लुत्फ उठा सकेगी। डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे, उन्होंने सन् 1896 में लंदन विश्वविद्यालय से विज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की थी, उन्हें भौतिकी, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा पुरातत्व का गहरा ज्ञान था। भारत के अनेक वैज्ञानिकों ने पूरे विश्व में अपने कार्यों से पहचान बनाई। ऐसे ही वैज्ञानिकों में डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस का नाम भी शामिल है। डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस को डॉक्टर जे.सी. बोस के नाम से भी जाना जाता है। डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस के समकालीनों में रविन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द और राजा राम मोहन राय जैसे महान लोग थे। वह समय बौद्धिक क्रांति का था और यही वो समय भी था जब देश में विज्ञान शोध कार्य लगभग नहीं के बराबर थे। ऐसी परिस्थितियों में डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस ने विज्ञान के क्षेत्र में मौलिक योगदान दिया। उस समय तक देश में इस तरह का काम किसी ने शुरु तक नहीं किया था।

डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस का जन्म 30 नवम्बर 1858 में ढाका जिले के फरीदपुर के मेमनसिंह गाँव में हुआ था, जो कि अब बांग्लादेश का हिस्सा है। डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस ने ग्यारह वर्ष की आयु तक गाँव के ही एक विद्यालय में शिक्षा ग्रहण की उसके बाद वे कोलकाता आ गये और 'सेंट जेवियर स्कूल' में प्रवेश लिया। जगदीश चंद्र बोस की जीव विज्ञान में बहुत रुचि थी फिर भी भौतिकी के एक विख्यात प्रो. फादर लाफोण्ट ने बोस को 'भौतिक शास्त्र' के अध्ययन के लिए प्रेरित किया। भौतिक शास्त्र में बी. ए. की डिग्री प्राप्त करने के बाद 22 वर्षीय बोस चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा के लिए लंदन चले गए। मगर स्वास्थ्य के खराब रहने की वजह से इन्होंने चिकित्सक (डॉक्टर) बनने का विचार छोड़ दिया और कैम्ब्रिज के 'क्राइस्ट महाविद्यालय' से बी. ए. की डिग्री ले ली। डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस वर्ष 1885 में स्वदेश लौट कर आये और भौतिक विषय के सहायक प्राध्यापक के रूप में 'प्रेसिडेंसी कॉलेज' में अध्यापन करने लगे। उस समय भारतीय शिक्षकों को अंग्रेज शिक्षकों की तुलना में एक तिहाई वेतन दिया जाता था। इसका डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस ने बहुत विरोध किया और तीन वर्षो तक बिना वेतन लिए काम करते रहे, जिसके कारण उनकी आर्थिक स्थिति खराब हो गई और उन पर काफी कर्ज भी हो गया था। इस कर्ज को चुकाने के लिये उन्होंने अपनी पुश्तैनी जमीन भी बेच दी। चौथे वर्ष डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस की जीत हुई और उन्हें पूरा वेतन दे दिया गया। डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस एक बहुत अच्छे शिक्षक भी थे, वह कक्षा में पढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर वैज्ञानिक प्रदर्शनों का प्रयोग करते थे। इनके द्वारा पढ़ाए गए छात्र सत्येंद्रनाथ बोस आगे चलकर प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री बनें।

डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस ने सूक्ष्म तरंगों (माइक्रोवेव) के क्षेत्र में वैज्ञानिक कार्य तथा अपवर्तन, विवर्तन और ध्रुवीकरण के विषय में अपने प्रयोग आरंभ किए। लघु तरंग दैर्ध्य, रेडियो तरंगों तथा श्वेत एवं पराबैंगनी प्रकाश दोनों के रिसीवर में गेलेना क्रिस्टल का प्रयोग बोस के द्वारा ही विकसित किया गया था। डॉक्टर बोस ने रेडियो

अपनी कम्फर्ट जोन से बाहर निकलिए। आप तभी ग्रो कर सकते हैं जब आप कुछ नया ट्राई करने में अजीब और असहज महसूस करने को तैयार हों।

तरंगों द्वारा बेतार संचार का प्रदर्शन किया था। इस प्रदर्शन में डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस ने दूर से एक घण्टी बजाई और बारूद में विस्फोट कराया था। आजकल प्रचलित बहुत सारे उपकरण जैसे वेव गाईड, ध्रुवक, परावैद्युत लैंस, विद्युत चुम्बकीय विकिरण के लिये अर्धचालक संसूचक, इन सभी उपकरणों का डॉक्टर बोस ने अविष्कार और उसका उपयोग किया था। डॉक्टर बोस ने ही सूर्य से आने वाले विद्युत चुम्बकीय विकिरण के अस्तित्व का सुझाव दिया था इसके बाद उन्होंने किसी घटना पर पौधों की प्रतिक्रिया पर अपना ध्यान केंद्रित किया और दिखाया कि यांत्रिक, ताप, विद्युत तथा रासायनिक जैसी विभिन्न प्रकार की उत्तेजनाओं में सब्जियों के ऊतक भी प्राणियों के समान कैसे विद्युतीय संकेत उत्पन्न करते हैं।

1917 में डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस को 'सर' की उपाधि प्रदान की गई तथा शीघ्र ही भौतिक तथा जीव विज्ञान के लिए रॉयल सोसायटी लंदन के फैलो चुन लिए गए। डॉक्टर बोस ने अपना पूरा शोधकार्य बिना किसी अच्छे (कीमती) उपकरण और प्रयोगशाला के किया था इसलिये डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस एक अच्छी प्रयोगशाला बनाने की सोच रहे थे। "बोस इंस्टीट्यूट" (बोस विज्ञान मंदिर) इसी सोच का परिणाम है, कोलकाता में स्थित यह एक वैज्ञानिक शोध संस्थान है जो कि विज्ञान में शोधकार्य के लिए राष्ट्र का एक प्रसिद्ध केंद्र

है। डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस केवल महान वैज्ञानिक ही नहीं थे, वे बंगला भाषा के अच्छे लेखक और कुशल वक्ता भी थे। विज्ञान तो उनके सांसो में बसता था। 23 नवंबर, 1937 को विज्ञान की ये विभूति इह लोक छोड़ कर परलोक सिधार गई। उन्नीसवीं सदी के अंतिम दिनों में डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस के कार्यों ने पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन कराया। आज भी वैज्ञानिक जगत में भारत का गौरव बढ़ाने वाले डॉक्टर जगदीश चंद्र बोस का नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ है। ऐसी विभूतियाँ सदैव अमर रहती हैं।

जयंत गुप्ता चौधुरी

बधाई

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की हिंदी शिक्षण योजना, नई दिल्ली के अंतर्गत आयोजित हिंदी टंकण प्रशिक्षण के लिए कार्यालय की ओर से श्री संजीव कुमार, सहायक-III (कम्प्यूटर) को मध्यमकालिक प्रशिक्षण (सत्र 01.02.17 से 30.03.17 तक) हेतु नामित किया गया। हिंदी शिक्षण योजना के द्वारा हिंदी टंकण की परीक्षा दिनांक 31.03.17 को आयोजित की गई, जिसका परिणाम 28.04.17 को घोषित किया गया। यह परीक्षा श्री संजीव कुमार ने 100 प्रतिशत अंक से उत्तीर्ण की। जिसके लिए उन्हें नीपको परिवार की ओर से बहुत-बहुत बधाई।

परीक्षा उत्तीर्ण करने पर सक्षम प्राधिकारी द्वारा उन्हें निम्नलिखित प्रोत्साहन की संस्वीकृति प्रदान की गई।

1. रूपए 2400/- (दो हजार चार सौ रूपए) मात्र एक मुश्त नकद पुरस्कार।

एवं

2. परीक्षा परिणाम घोषित होने की तिथि से 12 माह तक एक वेतन वृद्धि के बराबर की राशि का वैयक्तिक वेतन।

प्यार सिर्फ बांटने से बढ़ता है।

अंतरात्मा

मैं एक साधारण बालिका हूं मेरा जन्म एक उच्च मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ है। आज मैं अपनी लेखनी के माध्यम से आप सभी को जो बताने जा रही हूं शायद आपने भी कभी ऐसा महसूस किया होगा। मैंने अपने आस-पास जब भी किसी परिवार में बच्चे का जन्म होते हुए देखा तो यही पाया कि उस परिवार के सभी सदस्य उस बच्चे के आगमन पर बहुत ही खुश होते थे। अगर वह बच्चा उन्हें बेटे के रूप में प्राप्त होता तो उनकी खुशी दुगनी हो जाती थी। बेटी के अपेक्षा बेटे के जन्म पर ढेरों खुशियां मनाई जाती अलग-अलग रस्में निभाई जाती थी, उनमें से एक विशेष रस्म होती वह थी कुंआ पूजन की रस्म जो मैंने केवल उन्हीं के घरों में होती हुई देखी जहां पर बेटे का जन्म होता था। मैंने किसी भी परिवार में बेटी के जन्म पर कुंआ पूजन की रस्म होते हुए नहीं देखी। ऐसा क्यों? मैंने तो ऐसी कोई किताब नहीं पढ़ी, जिसमें लिखा हो कि बेटी के जन्म पर कुंआ पूजन न हो। परंतु अब समय बदल रहा है, अभी मैंने पिछले दिनों एक खबर पढ़ी हरियाणा के धनकोट गांव की जहां एक परिवार में बेटी के जन्म पर गांव में कुंआ पूजन का आयोजन किया गया।

मैंने ऐसा अनुभव किया है कि सभी माता-पिता अपने बच्चों के लिए यही प्रार्थना करते है कि उनका बच्चा उनसे भी बड़ा और अच्छा इंसान बने। माता-पिता उसके लिए अपना सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार हो जाते है। वह अपने बेटे को अच्छे से अच्छे स्कूल में भेजते है ताकि उस बच्चे को अच्छी पढ़ाई करा सकें। पिता अपने बच्चों के लिए दिन-रात मेहनत करता है वह खुद फटे हुए जूते पहन कर भी अपने बेटे को उसके मनपसंद का जूता दिलवाता है, अपनी चार साल पुरानी टाई से भी काम चला लेता है पर अपने बेटे का जन्मदिन हर साल धूम-धाम से मनाता है ताकि अपने बेटे को खुश देख सके। मां जो अपने बच्चे के जरा सा बीमार होने पर घबरा जाती है, रात भर जागकर उसका ध्यान रखती है और बिना सोए अगले दिन खाना बनाकर दफ्तर चली जाती है। माता-पिता अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देते हैं। इस संसार में कोई भी माता-पिता अपने बच्चों का बुरा नहीं चाहते वह जो कुछ भी करते है अपने बच्चों की भलाई के लिए ही करते हैं।

परंतु क्या यही बच्चे बड़े होकर अपने माता-पिता को उतनी इज्जत देते हैं? उनका कहा मानते हैं? उनका एहसान मानते हैं?, उनके दर्द में शामिल होकर उन्हें सहानुभूति देते हैं?, उनके साथ थोड़ा वक्त बिताते हैं? नहीं बिल्कुल नहीं। अधिकतर बच्चे बड़े होकर एहसान फरामोश बन जाते हैं। माता-पिता के बार-बार टोकने के बावजूद रात को देर से घर आते हैं। जब रात को (दिन भर मेहनत करने के बाद) पिता अपने बेटे को कहता है कि, बेटा जरा मेरे पैर तो दबा दें, तब यही बेटा अपने पिता को साफ इंकार कर देता है (जिस पिता ने उसके लंगोट अपने हाथों से बदले होते हैं, जिस पिता ने इन्हीं पैरों पर उसे खुश करने के लिए झुला झुलाया होता है) उनके पैरों को दबाने से मना कर देता है। क्या इस बेटे में जरा सी शर्म नहीं होती, अपनी दोस्ती यारी निभाने के लिए वो माता-पिता को कुछ नहीं समझता।

कितना दुख पहुंचता होगा उस मां को जब उसका बेटा उसे पानी पिलाने से मना कर देता है, उस मां की तो आत्मा रो ही पड़ती होगी जब उसी का बेटा उससे बदतमीजी से बात करता है। कैसा लगता होगा उस मां को जिसने हर महीने 500 रूपए बचाकर अपने बेटे के लिए जन्मदिन का तोहफा तैयार किया होता है और वही बेटा उस तोहफे को घटिया बताकर लेने से इंकार कर देता है और अपने दोस्तों के साथ पार्टी प्लान करता है उनके साथ इंजॉय करता है। लानत है ऐसे बेटे पर जो अपने माता-पिता को दुख देता है। जिन माता-पिता ने अपने बच्चे को जीवन प्रदान किया है क्या वह उसका बुरा चाह सकते हैं? नहीं कभी नहीं।

मेरी अंतरात्मा तो यही कहती है कि माता-पिता हमारी अनेक गलतियों व अपराधों को कष्ट सहते हुए भी क्षमा करते हैं और सदैव हमारे हितों को ध्यान में रखते हुए अच्छे मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं तो हमें भी अपने माता-पिता को पूर्ण सम्मान प्रदान करना चाहिए तथा उन्हें खुशियां प्रदान करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए। माता-पिता तो परमात्मा के रूप होते हैं, जैसे हम परमात्मा की पूजा करते है वैसे ही हमें अपने माता-पिता को पूजना चाहिए, उनका कहना मानना चाहिए, उनका आदर-मान करना चाहिए। हमें कभी भी अपने माता-पिता के सहयोग, उनके त्याग और बलिदान को नहीं भूलना चाहिए। माता-पिता की सेवा और उनकी आज्ञा पालन करना ही सबसे बड़ा धर्म है।

नव्या शर्मा
सुपुत्री श्री प्रदीप कुमार शर्मा

ये मायने नहीं रखता कि आप कहाँ से आ रहे हैं।
बस ये मायने रखते है कि आप कहाँ जा रहे हैं।

राष्ट्रीय गान और राष्ट्रीय गीत

हम में से ऐसे बहुत से लोग है, जिन्हें राष्ट्रीय गान और राष्ट्रीय गीत के बारे में सही फर्क मालूम नहीं है, वे राष्ट्रीय गान और राष्ट्रीय गीत को एक ही मानते हैं। मगर हमारे देश का राष्ट्रीय गान जन-गण-मन तथा राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् है। जन-गण-मन को राष्ट्रीय गान और वंदे मातरम् को राष्ट्रीय गीत का दर्जा कैसे मिला इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है। स्वाधीनता संग्राम में वन्दे मातरम् गीत की निर्णायक भागीदारी के बावजूद जब राष्ट्रीय गान के चयन की बात आई तो वन्दे मातरम् के स्थान पर रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखे व गाए गए गीत ' जन-गण-मन ' को वरीयता दी गयी। इसकी वजह यही थी कि कुछ मुसलमानों को ' वन्दे मातरम् ' गाने पर आपत्ति थी क्योंकि इस गीत में देवी दुर्गा को राष्ट्र के रूप में देखा गया है। इसके अलावा उनका यह भी मानना था कि यह गीत जिस आनंद मठ उपन्यास से लिया गया है, वह मुसलमानों के खिलाफ लिखा गया है। इन आपत्तियों के मद्देनजर सन् 1937 में कांग्रेस ने इस विवाद पर गहरा चिंतन किया। पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में गठित समिति जिसमें मौलाना अबुल कलाम आजाद भी शामिल थे, उन्होंने पाया कि इस गीत के शुरूआती दो पद तो मातृभूमि की प्रशंसा में कहे गये हैं, लेकिन बाद के पदों में हिन्दू देवी-देवताओं का जिक्र होने लगता है, इसलिये यह निर्णय लिया गया कि इस गीत के शुरुआती दो पदों को ही राष्ट्रीय गीत के रूप में प्रयुक्त किया जाएगा।

अत: औपचारिक रूप से 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा ने गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर द्वारा रचित जन-गण-मन को भारत के राष्ट्रीय गान और बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा रचित वंदे मातरम् के प्रारम्भिक दो पदों को राष्ट्रीय गीत का दर्जा दिया, इसका स्थान भी जन-गण-मन के बराबर ही है। मोहम्मद इकबाल के कौमी तराने सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा को अनौपचारिक रूप से भारत के राष्ट्रीय गीत का दर्जा प्राप्त है। राष्ट्रीय गान और राष्ट्रीय गीत के बोल इस प्रकार है:-

राष्ट्रीय गान

जनगणमन-अधिनायक जय हे भारतभाग्यविधाता!

पंजाब सिंध गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंग

विन्धय हिमाचल यमुना गंगा उच्छलजलधितरंग

तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे,

गाहे तव जयगाथा।

जनगणमंगलदायक जय हे भारतभाग्यविधाता!

जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।।

राष्ट्रीय गीत

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!

सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज शीतलाम्,

शस्यश्यामलाम्, मातरम्!

शुभ्रज्योत्सनाम् पुलकितयामिनीम्,

फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्,

सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्,

सुखदाम् वरदाम्, मातरम्!

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्।।

सभी सफल लोग बड़े सपने देखने वाले होते हैं। वे सोचते हैं कि उनका भविष्य कैसा हो सकता है। वे हर रोज अपने उस लक्ष्य या मकसद को प्राप्त करने के लिए काम करते हैं।

आह वेदना, मिली विदाई।।

निज शरीर की ठठरी लेकर,
उपहारों की गठरी लेकर।
जब पहुंचा मैं द्वार तुम्हारे,
सपनों की सुषमा उर धारे।।
मिले तुम्हारे पूज्य पिताजी,
मुझको कस कर डांट लगाई।
आह वेदना, मिली विदाई।।

पूर्व में उषा मुस्काई,
तुमसे मिलने की सुधि आई।
निकला घर से मैं मस्ताना,
मिला राह में नाई काना।।
पड़ा पांव के नीचे केला,
बची टूटते आज कलाई।
आह वेदना, मिली विदाई।।

चला तुम्हारे घर से जैसे,
मिले राह में मुझको भैंसे।
किया आक्रमण सबने मुझ पर,
मानों मैं था भूसे का गठर।।
जीवन पर अपने थी बन आई,
गिरा गटर में मैं प्रिय आज।
आह वेदना, मिली विदाई।।

अब तो दया करो कुछ बाले,
नहीं संभलता हृदय संभाले।
शांति नहीं मिलती है दो क्षण,
लगा कीटाणु प्रेम का भीषण।।
प्यार का मरहम शीध्र लगाओ,
कुछ तो समझो पीर पराई।
आह वेदना, मिली विदाई।।

आशीष भट्टाचार्जी

मेरी बिटिया

किलकारी से घर भर दिया तूने, सदा ही तू मुस्काना।
ममता थी मेरी अधूरी, तुझे पाकर हो गई मैं पूरी।।
तेरे बिन सब सूना था, जीवन में सब ओर अंधेरा था।
ऊपर वाले ने आखिर सुन ली पुकार, खुशियों से भर दी मेरी झोली।।
सिमट गई है दुनिया मेरी, अब एक नन्ही सी कली में।
बन गई वो मंजिल और राह भी मेरी जिंदगी की।।
ना चाहती थी धन और वैभव, बस चाहती थी मैं तुझको।
तू ही लक्ष्मी, तू ही शारदा, मिल गई है मुझको।।
सारी दुनिया लगती अब गुलशन, तूने इसको महकाया।
बन कर रहना तू गुड़िया सी, थोड़ा सा इठलाना।।
उंगली पकड़ कर चलना पापा की, कंधों पर चढ़ जाना।
ठुमक-ठुमक कर चलना घर में, पायल तुम खनकाना।।
चेहरा देख के तू शीशे में, कभी-कभी शरमाना।
बड़े हो कर पढ़-लिखकर, दुनिया में खूब नाम कमाना।।
तुझे देने के लिए बस, यही आशिर्वाद है मेरे आंचल में।
किलकारी से घर भर दिया तूने, सदा ही तू मुस्काना।।

शर्मिष्ठा गुप्ता चौधुरी
पत्नी श्री जयंत गुप्ता चौधुरी

एहसास के साथ आप जो कुछ भी यकीन करते हैं वही आपकी हकीकत बन जाती है।

सत्संग के प्रभाव से पाँच प्रेतों के उद्धार की कथा

हारीत स्मृती ने मानव मात्र के लिए कुछ सामान्य धर्मों का परिगणन किया है, जिनमें सत्संग भी है। संतों की संगति से लाभ ही लाभ होता है। संत तुलसी दास जी ने कहा है कि एक क्षण भी सत्संग करने से जो सुख प्राप्त होता है, उसकी तुलना में स्वर्ग और अपवर्ग का सुख बिल्कुल नगण्य है। यह तो हुआ आध्यात्मिक लाभ, आधिदैविक और आधिभौतिक लाभ भी इससे शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है। रत्नाकर डाकू का देवऋषि नारद से जो थोड़ी देर का संग हुआ, उसका नतीजा बहुत ही चौकानें वाला है। वह व्यक्ति बाल्मीकी रूप महर्षि और आदिकवि बन गया। इसी तरह पद्मपुराण से पता चलता है कि एक संत के साथ केवल बातचीत करने से कुछ ही देर में पाँच प्रेतों को प्रेतत्व से छुटकारा मिल गया और वे दिव्य विमानों पर चढ़कर ऊँचे लोकों में चले गये।

प्राचीन काल में पृथु नाम के एक आचारनिष्ठ ब्राह्मण थे। वे दिन रात धर्म के ही कार्य किया करते थे। एक बार तीर्थ यात्रा के प्रसंग से वे एक वन में पहुँचे। वह वन वृक्ष और लता से शून्य था, कहीं जल भी दिखाई नहीं देता, केवल काँटे ही काँटे वहाँ दिखायी पड़ते थे। सहसा ब्राह्मण देवता की दृष्टि पाँच प्रेतों पर पड़ गई। वे देखने में बहुत ही भयंकर थे, देखते ही ब्राह्मण देवता में भय का संचार हो गया। किन्तु तुरंत ही उन्होंने धैर्य धारण कर लिया। उन्होंने पूछा-तुम लोग कौन हो? तुमसे ऐसे कौन से कर्म हो गये हैं कि तुम्हारी आकृति इतनी विकृत हो गयी है? तुम सब इतने दु:खी और बेचैन क्यों हो ?

प्रेतों में से एक ने कहा-आपने ठीक ही समझा है, सचमुच हम लोग निरंतर दु:ख ही दु:ख में डूबे रहते हैं। एक क्षण भी चैन नहीं पाते। हमारा ज्ञान भी लुप्त हो गया है। हम इतना भी नहीं जानते कि कौन दिशा किस ओर है। केवल दु:ख ही दु:ख का ज्ञान होता रहता है। ब्राह्मण ने याद दिलाया कि क्या आपको पता है कि आप लोगों को किस किस कर्म से यह दुर्गति प्राप्त हुई है? उनमें से एक ने कहा कि मैं ताजा और स्वादिष्ट भोजन स्वयं खा जाता था और ब्राह्मणों को बासी खिलाता था, इस कारण मेरा नाम पर्युषित पड़ गया है। इस पाप से मैं प्रेत बन गया हूँ और मेरा भयानक रूप हो गया है। मेरे दूसरे साथी ने कुछ भूखे और अन्न मांगने वाले ब्राह्मणों की हत्या कर दी। इस पाप से यह सूचीमुख नाम का प्रेत हो गया है। इसका मुख सुई की तरह छोटा है। एक तो भोजन पानी मिलता ही नहीं, मिलने पर भी सुई जितने छोटे छेद से कितना पानी पिया जा सकता है और कितना भोजन किया जा सकता है। यह हमेशा भूख और प्यास से तड़पता ही रहता है। यह तीसरा प्रेत 'भूखे ब्राह्मणों को कुछ देना न पड़े' इस भय से शीघ्रता पूर्वक वहाँ से हट जाता था, इसलिए इसका नाम शीघ्रग हो गया। इस प्रेत योनि में इसको लंगड़ा बनना पड़ा। यह जो चौथा प्रेत है, वह देने के डर से केवल घर में बैठकर स्वादिष्ट भोजन किया करता था, वह रोधक कहलाता है। इस प्रेत योनि में इसे सिर नीचे करके चलना पड़ रहा है। यह जो पाँचवाँ प्रेत है, वह किसी के मांगने पर कुछ बोलता नहीं था, केवल सिर नीचा करके धरती कुरेदने लगता था। इसलिए इसके अंग प्रत्यंग विकृत हो गए हैं और इसका नाम लेखक पड़ गया।

ब्राह्मण ने पूछा-आखिर तुम लोग खाते पीते क्या हो? प्रेतों ने कहा कि 'हमको बहुत ही निंदित भोजन करना पड़ता है। जिन घरों में पवित्रता नहीं होती। वहीं हमें विकृत पदार्थों का भोजन प्राप्त होता है।

अंत में प्रेतों ने ब्राह्मण से प्रार्थना की कि आप तपस्वी हैं, आप बताएं कि वह कौन सा कर्म है, जिस कर्म से जीव प्रेत योनि में नहीं पड़ता। ब्राह्मण ने कहा - जो मनुष्य एक या तीन कृच्छ-चन्द्रायण व्रत करता है, वह कभी प्रेत योनि में नहीं जाता। जो मान अपमान में और शत्रु मित्र में समान भाव रखता है वह भी प्रेत योनि में नहीं जाता। जिसने क्रोध, ईर्ष्या तथा लोभ आदि को जीत लिया है, वह प्रेत नहीं होता। जिसके हृदय में सम्पूर्ण प्राणियों के प्रति दया भरी हुई है तथा जो गौ, ब्राह्मण, तीर्थ, पर्वत, नदी और देवताओं को प्रणाम करता है, वह मनुष्य प्रेत नहीं होता।

पृथु जब इस प्रकार उपदेश दे रहे थे, उसी समय आकाश में सहसा नगाड़े बजने लगे, आकाश से पुष्प-वृष्टि होने लगी और चारों और से उन पाँच प्रेतों के लिए विमान आ गए। आकाशवाणी हुई-एक संत के साथ वार्तालाप करने के कारण तुम सब प्रेतों कि दिव्य गति हुई है। इस प्रकार सत्संग के प्रभाव से सब प्रेतों का उद्धार हो गया।

प्रदीप शर्मा

काफी हद तक भाग्य उम्मीद के मुताबिक होता है। अगर आप अधिक भाग्य चाहते हैं तो अधिक जोखिम उठाएं। अधिक एक्टिव रहें।

दिल्ली के कुछ धार्मिक स्थल जहां आप जरूर जाना चाहेंगे।

अक्षरधाम मंदिर

अपनी बनावट और खूबसूरती के लिए न सिर्फ भारत बल्कि पूरी दुनिया में दिल्ली का स्वामी नारायण अक्षरधाम मंदिर मशहूर है। मंदिर की भव्यता और कारीगरी को देखते हुए गिनीज वर्ल्ड ऑफ रिकार्ड ने इसे दुनिया में हिंदुओं का सबसे बड़ा मंदिर होने का दर्जा दिया है। 100 एकड़ जमीन पर बना इस मंदिर का शिलान्यास 8 नवम्बर 2000 को हुआ था। इसे बनने में 5 साल का वक्त लगा था। अक्षर धाम में नक्काशीदार 234 खंबे, 9 विशाल गुंबद, 20 शिखर तथा 20000 से भी ज्यादा तराशी हुई कलाकृतियां है। **खुलने का वक्त :** मंगलवार से शनिवार सुबह 9:30 से 6 बजे तक, नजदीकी मेट्रो स्टेशन अक्षरधाम।

बिरला मंदिर

दिल्ली के दिल कनॉट प्लेस से मात्र 15 किलोमीटर पर बने बिरला मन्दिर का निर्माण 1938 में किया गया था और महात्मा गाँधी के द्वारा इस मदिर का उद्घाटन किया गया था। यहां भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की मूर्तियां है जिनकी पूजा की जाती है। जन्माष्टमी के अवसर पर यहां पर भव्य समारोह का आयोजन किया जाता है।

खुलने का वक्त : सुबह 4:30 से 1:30 बजे और दोपहर बाद 2:30 बजे से 9:00 बजे तक नजदीकी मेट्रो स्टेशन राजीव चौक।

अगर आप अपने बच्चों को ऐसे बड़ा करते हैं कि वे ये महसूस कर सकें कि वे जो चाहें वो लक्ष्य या काम पूरा कर सकते हैं तो एक अभिभावक के रूप में आप सफल हो चुके होंगे।

इस्कॉन टेम्पल

यह मंदिर पूरी तरह से भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित है और मंदिर का निर्माण इस्कॉन फाउंडेशन द्वारा 1998 में करवाया गया। यह मंदिर दिल्ली के 'ईस्ट ऑफ कैलाश के सामने पहाड़ी पर बना है। जो प्राकृतिक सौन्दर्यता के लिए भी जाना जाता है। यह मंदिर दिल्ली के अलावा देश भर में मशहूर है।

खुलने का वक्त : सुबह 4:30 से दोपहर 12 बजे तक और शाम में 4 बजे से रात्रि 9 बजे तक है।

नजदीकी मेट्रो स्टेशन नेहरू प्लेस।

जामा मस्ज़िद

जामा मस्जिद भारत की सबसे बड़ी मस्जिद है। यह मस्ज़िद लाल किले के सामने है। इसका निर्माण मुगलवंश के शासक शाहजहां के काल में 1644 से 1658 ई. माना जाता है। मस्जिद का निर्माण लाल पत्थर से किया गया है जिसे बनाने में 5000 से ज्यादा शिल्पकारों की मदद ली गई थी। बनते वक्त इसकी देखरेख का जिम्मा शाहजहां के प्रधानमंत्री सादुल्ला खान के पास था। इसे बनाने में उस वक्त तकरीबन 10 लाख रूपए खर्च हुए थे।

खुलने का वक्त : रोज सुबह 7 बजे से 12 बजे तक और दोपहर बाद 1:30 से 6:30 बजे तक नजदीकी मेट्रो स्टेशन चांदनी चौक

बंगला साहिब गुरूद्वारा

बंगला साहिब गुरूद्वारा दिल्ली के दिल कनॉट प्लेस के पास स्थित है। आज जहां यह गुरूद्वारा बना हुआ है, वहां पहले आमेर के राजा जय सिंह का भव्य महल था। सिख के 8वें गुरू हरकिशन सिंह, राजा जय सिंह के इस महल में उनके मेहमान के तौर पर रहा करते थे। इस गुरूद्वारा का मुख्य कक्ष आधा सोने से और आधा कांसे से बना है। सिख धर्म के छठें गुरू हरगोविन्द सिंह भी इस गुरूद्वारे का भ्रमण कर चुके थे।

खुलने का वक्त : 24 घंटे रोज नजदीकी मेट्रो स्टेशन राजीव चौक।

कोई भी इतना अधिक नहीं जीता कि वो हर चीज को एकदम शुरू से सीख सके। सफल होने के लिए, हमें निश्चित तौर पर, उन लोगों को खोजना होगा जो पहले ही वो चीजें सीखने की कीमत चुका चुके हों।

टिप्पणी के संदर्भ में प्रयोग होने वाले वाक्य

1. सामान्य

1. देख लिया, धन्यवाद।
2. देखकर वापस किया जाता है।
3. अनुभाग अधिकारी ने देख लिया है।
4. सूचना के लिए प्रस्तुत।
5. आदेश के लिए प्रस्तुत।
6. कृपया पावती भेजें।
7. विचाराधीन पत्र की प्राप्ति सूचना नहीं भेजी गई है।
8. जरूरी कार्रवाई कर दी गई है।
9. उत्तर का मसौदा प्रस्तुत है।
10. कृपया पिछली टिप्पणियाँ देख लें।
11. आगे कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं है।
12. प्रस्ताव अपने आप में स्पष्ट है।

2. सम्मति, कागज आदि मंगाना, स्थिति मालूम करना

1. कागज-पत्र इसके साथ भेजे जा रहे हैं।
2. इसे आवश्यक कार्रवाई के लिए....... को भेजा जाए।
3. गृह मंत्रालय से परामर्श किया जाए।
4. अपेक्षित कागज-पत्र नीचे रखें।
5. वित्त मंत्रालय ने जो कागज माँगे हैं वे इस फाइल के साथ दिए गए हैं,
6. मुख्य मिसिल पर निर्णय होने तक इसे रोके रखें।
7. यह मिसिल टिप्पणी के लिए गृह मंत्रालय को भेज दी जाए।
8. मुख्य मिसिल वापस आने की प्रतीक्षा की जाए।
9. मामला अभी वित्त मंत्रालय के विचाराधीन है।
10. प्रशासन अनुभाग कृपया देख लें।

3. सुझाव संबंधी टिप्पणियाँ

1. यह प्रस्ताव नियमानुसार है।
2. प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए।
3. आवेदन अस्वीकार कर दिया जाए।
4. माँगी गई आकस्मिक छुट्टी दे दी जाए।
5. प्रस्ताव अपने आप में स्पष्ट है, इसे मान लिए जाए।
6. 27.3.2016 को हुई बैठक के कार्यवृत्त का मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
7. इसकी मंजूरी देने के लिए निदेशक महोदय सक्षम हैं।

4. संक्षिप्त आदेश संबंधी टिप्पणियाँ

1. कृपया चर्चा करें।
2. यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए।
3. कृपया स्वत:पूर्ण टिप्पणी प्रस्तुत करें।
4. कृपया सभी को दिखा कर फाइल कर दें।
5. तुरंत अनुस्मारक भेजें।
6. मैं सहमत हूँ।
7. यथा संशोधित पत्र भेज दें।
8. प्रारूप पर सहमति दी जाती है।
9. अनुमोदित / स्वीकृत।
10. जाँच पूरी की जाए और रिपोर्ट जल्दी प्रस्तुत की जाए।

5. वित्तीय और प्रशासनिक टिप्पणियाँ

1. वित्त मंत्रालय कृपया सहमति के लिए देख ले।
2. इस व्यय के लिए चालू वित्तीय वर्ष के बजट में व्यवस्था है।
3. इस आदेश को पीछे की तारीख से लागू नहीं किया जा सकता।
4. वित्त मंत्रालय से परामर्श करके यह निश्चय किया गया है कि...
5. अभ्यावेदन उचित माध्यम से नहीं मिला है। हमें इस पर कोई कार्रवाई करने की आवश्यकता नहीं।
6. अनुमति देना लोकहित के प्रतिकूल होगा। प्रार्थना अस्वीकृत कर दी जाए।
7. इस अंतिम बिल पर लेखा शीर्ष नहीं लिखा गया है।
8. बिल निम्नलिखित आपत्तियों के साथ वापस किया जाता है।
9. बिल का सत्यापन कर लिया गया है। यह ठीक है। भुगतान के लिए पारित किया जाए।
10. इस राशि को बट्टे खाते में डालने से पहले जिम्मेदारी निर्धारित करना जरूरी होगा।
11. यह प्रमाणित किया जाता है कि बिल की रकम सही कर्मचारी को दी गई है।

निर्णय लेना उच्च प्रदर्शन करने वाले पुरूष और महिलाओं की विशेषता है।

राष्ट्र कविः रामधारी सिंह दिनकर

रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर, 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले में हुआ। हिंदी साहित्य में एक नया मुकाम बनाने वाले दिनकर छात्र जीवन में इतिहास, राजनीतिक शास्त्र और दर्शन शास्त्र जैसे विषयों को पसंद करते थे, हालांकि बाद में उनका झुकाव साहित्य की ओर हुआ। वह अल्लामा इकबाल और रवींद्रनाथ टैगोर को अपना प्रेरणा स्रोत मानते थे।

उन्होंने रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाओं का बांग्ला से हिंदी में अनुवाद किया। दिनकर का पहला काव्यसंग्रह 'विजय संदेश' वर्ष 1928 में प्रकाशित हुआ। उन्हें वर्ष 1959 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया। पदम भूषण से सम्मानित दिनकर राज्यसभा के सदस्य भी रहे। वर्ष 1972 में उन्हें ज्ञानपीठ सम्मान भी दिया गया। देश की आजादी की लड़ाई में भी दिनकर ने अपना योगदान दिया। वह बापू के बड़े मुरीद थे। हिंदी साहित्य के बड़े नाम दिनकर उर्दू, संस्कृत, मैथिली और अंग्रेजी भाषा के भी जानकार थे। वर्ष 1999 में उनके नाम से भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया। 24 अप्रैल, 1974 को उनका देहावसान हो गया। दिनकर जी ने अपनी भावनाओं को अपने कविता के माध्यम से आगे बढ़ाया।

दिनकर जी द्वारा रचित कविता।

लेन-देन

लेन-देन का हिसाब
लंबा और पुराना है।
जिनका कर्ज हमने खाया था,
उनका बाकी हम चुकाने आये हैं।
और जिन्होंने हमारा कर्ज खाया था,
उनसे हम अपना हक पाने आये हैं।
लेन-देन का व्यापार अभी लंबा चलेगा।
जीवन अभी कई बार पैदा होगा
और कई बार जलेगा।
और लेन-देन का सारा व्यापार
जब चुक जायेगा,
ईश्वर हमसे खुद कहेगा-
तुम्हार एक पावना मुझ पर भी है,
आओ, उसे ग्रहण करो।
अपना रूप छोड़ो,
मेरा स्वरूप वरण करो।

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(एक मिनी रत्न भारत सरकार का उद्यम)

पंजीकृत कार्यालय :

ब्रुकलैण्ड कम्पाउन्ड, लोअर न्यू कॉलोनी, शिलांग-793003, मेघालय

वेबसाइट / Website : www.neepco.co.in

Join us: /NEEPCOIndia /NEEPCOIndia

सीआईएन/CIN: U40101ML1976GOI001658